❀ ओ३म् ❀

संदेश ग्रन्थमाला का प्रथम पुष्प

ब्रह्मचर्य सन्देश

वैदिक धर्म और संस्कृति के पुनरुद्धारक
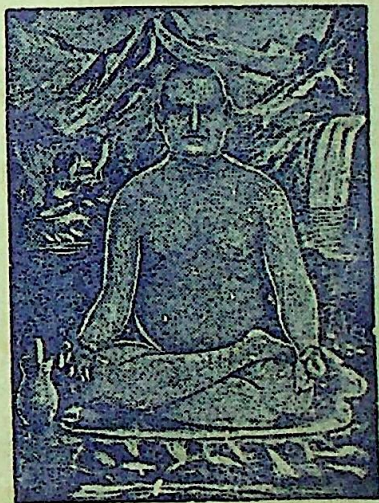
महर्षि दयानन्द सरस्वती

लेखक :

ब्रह्मचारी बलदेव नैष्ठिक

वैदिक योगाश्रम, शुक्रताल, जिला मुजफ्फरनगर (उ० प्र०)

द्वितीय बार २००० प्रतियां] [मूल्य ०-५० पैसे

वैदिक योग [illegible]

मासिक पत्र

"संस्कृति संदेश"

धर्म की जागृति के लिए आश्रम से

संस्कृति-सन्देश

नामक मासिक पत्र

प्रकाशित होता है ।

इसका लक्ष्य है

राष्ट्र का उत्थान और भ्रष्टाचार उन्मूलन ।

पत्र का वार्षिक मूल्य

केवल ५-०० रुपये मात्र है।

आप भी

संस्कृति-संदेश

के ग्राहक बनें

तथा अपने मित्रों को भी इसका ग्राहक बनायें ।

भूमिका

यह छोटी-सी पुस्तिका देश के उन बालक-बालिकाओं के लिये लिखी गई है, जिन्होंने देश का निर्माण करना है। आज तक हमें इस बात का पता नहीं कि जिन बालकों को हमने आवारा छोड़ रखा है, उन्होंने कल राष्ट्र का कर्णधार बनना है। मैं इस बात को दुन्दुभि बजा कर कहता हूं कि यदि राष्ट्र के बालक-बालिकाओं का निर्माण हो गया तो राष्ट्र का निर्माण हो जायेगा और यदि राष्ट्र के बालक-बालिकाओं का पतन हो गया तो राष्ट्र का भी अधो-पतन हो जायेगा। बालक और बालिकाएं राष्ट्र की अमूल्य निधि हैं। ये वे उदीयमान् नक्षत्र हैं जिन्होंने अपने प्रकाश से भूमंडल को प्रकाशित करना है। ये वे अनमोल रत्न हैं जिन्होंने राष्ट्र के सिंहासन को विभूषित करना है। ये वे मनोहर पुष्प हैं जिन्होंने दिग्-दिगन्त को सुगन्धित करना है। इन बालकों में ही कपिल, कणाद, जैमिनी, पतञ्जलि, वेदव्यास, उद्दालक, याज्ञवल्क्य प्रभृति महर्षि छिपे हुए हैं। भीष्म, हनुमान, शंकर और दयानन्द जैसे ब्रह्मचारी भी इन्ही बालकों ने बनना है। कहां तक लिखूं, ऋषि महर्षि, मुनि-महामुनि, तपस्वी, ब्रह्मचारी, साधु-सन्यासी, राजा-महाराजा, योद्धा, पहलवान, देवी-देवता नेता, माता और पिता सब कुछ इन बच्चों ने बनना है। परन्तु महान् दुःख से लिखना पड़ता है कि जो बालक राष्ट्र के सर्वस्व हैं—उनके निर्माण पर किसी का भी ध्यान नहीं है। किसी का एक पैसा खोया जाये तो वह लाख गम के आंसू बहाता है. परन्तु आज जाति के लाखों करोड़ों

लाल लुट रहे हैं फिर भी हमें दुःख नही होता। हजारों नौनिहाल दिन-दहाड़े नष्ट-भ्रष्ट हो रहे हैं, फिर भी हम चैन से बैठे हैं। जब मैं इन हजारों युवक-युवतियों को अपनी आंखों से नष्ट होते हुए देखता हूं तो बरबस मेरी आंखों में आंसू आने लगते हैं। यदि आप भी जानना चाहें कि राष्ट्र के आधार ये तरुण कैसे नष्ट हो रहे हैं तो लो सुनो, मैं सुनाता हूं यह दुःख भरी कहानी।

जिन शिक्षणालयों में देश के निर्माता चरित्रवान् ब्रह्मचारी पैदा होते थे, आज वे ही शिक्षणालय दुराचार के केन्द्र बन गये हैं। देश के होनहार सपूत यहां रात-दिन बुरी तरह से बर्बाद किये जा रहे हैं। ब्रह्मचारी, सदाचारी बनना तो दूर रहा, ये स्कूल-कालेज तो चरित्रहीन बाबू जी पैदा करने की फैक्ट्री बन गये हैं। जिन विद्यालयों में हजारों छात्र पढ़ते हैं—वहां एक भी ब्रह्मचारी नज़र नहीं आता। १६ वर्ष से ऊपर कोई एक-दो भाग्यशाली बालक होगा जो आजकल के स्कूल-कालेजों में पढ़ता हुआ ब्रह्मचारी हो। ब्रह्मचारी बने भी कैसे? प्रथम तो पाश्चात्य शिक्षा का विषैला रोग बालकों को अपने धर्म से गिरा देता है। दूसरे स्कूल-कालेजों में कुछ नीच गुण्डों का गिरोह होता है। इनका कार्य दूसरों को बिगाड़ने के अतिरिक्त कुछ नहीं होता। इस दुराचारी टोली से बचना सब से कठिन कार्य है। हजारों सुशील बालकों को बदमाशों का यह समूह बर्बाद कर देता है। तीसरे अनेक दुराचारी अध्यापक भी हैं जिनके संग से विद्यार्थी धड़ाधड़ नष्ट होते जा रहे हैं। चौथे सह-शिक्षा ने रही-सही कमी पूरी कर दी है। जिस विद्यालय में लड़के-लड़की साथ-साथ पढ़ते हैं—वहां से सदाचार सदा के लिये विदा हो

चुका है। बड़े खेद का विषय है कि भारत का आशा का स्थल विद्यार्थी-जगत् शिक्षा के नाम पर बुरी तरह नष्ट हो रहा है। यदि ये विद्यालय इसी तरह से रहे और सच्चे शिक्षणालय न बने तो कुछ ही दिनों में राष्ट्र की समस्त सन्तति पथ-भ्रष्ट हो जायेगी। भगवान वह दिन शीघ्र लाये जब हमारे स्कूल, कालेजों से चरित्रहीनता के सब दुर्गुण मिटें और ये सच्चे शिक्षणालय बनें।

हजारों युवक तो स्कूल-कालेज की मार ने मार दिये और लाखों युवक सिनेमाघरों ने समाप्त कर दिये। चरित्र का जितना विनाश सिनेमा ने किया है इतना और किसी ने आज तक नहीं किया। कितने दुःख की बात है कि राष्ट्र के लाखों लाल सिनेमा की भेंट चढ़ रहे हैं—परन्तु हम उन्हें बचा नहीं सकते। मानें या न मानें, सिनेमा विषयों की ऐसी धधकती आग है जिसमें सदाचार धक्-धक् करके जल जाता है। करोड़ों की जवानियां जल गईं, करोड़ों की जल रही हैं और करोड़ों की जल जायेंगी।

आज हमारी कैसी बुरी दशा हो गई है? उठने-बैठते अंधेरी आती है। जवानी के दर्शन दुर्लभ हो गये हैं। बुद्धि, बल, तेज, साहस वीरता और शक्ति ने हमारे से मुख मोड़ लिया है। आंखों पर चश्मा चढ़ गया है। सिर में हर समय दर्द रहता है। बीड़ी की धुआंधार के बिना टट्टी नहीं उतरती। दुनिया के भयंकर रोगों ने हमें बुरी तरह घेर लिया है। चारों ओर पापाचार-कदाचार के काले-काले मेघ मंडरा रहे हैं। हमारा जीवन दुःखमय और भार हो गया है। कैसी आश्चर्य की घटना है यह! जिस देश के शिशु सिंहों के साथ खेलते थे—वही देश आज

निर्वीर्य शक्तिहीन हो गया है। जिस देश के ऋषियों ने सबसे पहले संसार को सदाचार का संदेश दिया था वही आज दुराचार के गर्त में गिरा हुआ है। जो दूसरों को सहारा देते थे— वे स्वयं दूसरों का आश्रय ढूंढ रहे हैं। कैसा आश्चर्यजनक पतन हो गया है हमारा !

भारत के भावी कर्णधार युवको ! तुम्हें पतन से बचाने के लिये और महान बनाने के लिये तुम्हारे लिये मैं एक संदेश लाया हूं। क्या तुम इसे सहर्ष स्वीकार करोगे ? यह सन्देश कोई साधारण सन्देश नहीं है। यह प्राचीन भारत का सन्देश है। यह आदि सृष्टि का सन्देश है। यह ऋषि-महर्षियों का पावन सन्देश है। क्या तुम इसे सच्चे हृदय से सुनना चाहते हो ? यदि हां, तो लो सुन लो, कान खोल कर सुन लो। फिर न कहना कि हमें पता नहीं चला। यह वह सन्देश है जिसको दुनिया मान चुकी है। यह अमर सन्देश है। जो इसे सुनता है अमर हो जाता है। यह ऐरे गैरे नत्थू खैरे का सन्देश नही है। यह वेदों का सन्देश है। यह अमृत रूपी संदेश है—ब्रह्मचर्य। ब्रह्मचर्य !! ब्रह्मचर्य !!! इसे सुनो और संसार के कोने-कोने में सुना दो। मेरी यह प्रबल इच्छा है कि यह दिव्य-सन्देश प्रत्येक स्कूल, कालिज, पाठशाला, गुरुकुल, गिरजा, मठ, मन्दिर, गुरुद्वारा, मस्जिद, नगर, ग्राम, कूंचे पर्वत, सागर, वन, जंगल सर्वत्र फैल जाये। इस सन्देश के फैलाये बिना संसार का सुधार नहीं हो सकता।

मुझे यह सन्देश ऋषि-महर्षियों से मिला। मैंने आप तक पहुंचा दिया। अब आप जानो आपका काम। मुझे इस सन्देश

सेवह आनन्द प्राप्त हुआ है, जिसको लेखनी लिख नहीं सकती और वाणी कह नहीं सकती। जिस दिन से मुझे यह संदेश मिला है, मेरा कुछ का कुछ हो गया है। मुझे पागल बना दिया है इस ब्रह्मचर्य ने। निराली मस्ती है इसमें। मैं यह चाहता हूं तुम भी पागल हो जाओ इसके पीछे। अनूठा आनन्द मिलता है ब्रह्मचर्य के पीछे पागल होने में। यदि एक बार भी तुम इस के पीछे पागल हो गये तो फिर इसे कभी नहीं छोड़ोगे। जो आदमी ब्रह्मचर्य के पीछे पागल नहीं हो जाता वह ब्रह्मचर्य को क्या समझे? पागल बनने वालों ने ही इसका स्वाद चखा है। जब दुनिया के लोग इन्हें पागल कहते हैं तो ये भी कह दिया करते हैं:—

इन पागल दिमागों में भरे खुशियों के लच्छे हैं ॥
हमें पागल ही रहने दो हम पागल ही अच्छे हैं।

There is Pleasure sure in being a mad behind Brahmacharya, which none, but mad men know.

"ब्रह्मचर्य के पीछे पागल बनने में एक अद्भुत आनन्द भरा हुआ है-परन्तु उस आनन्द को वे ही दीवाने जानते हैं और दुनिया का कोई आदमी नहीं जानता।

युवको! मैं चाहता हूं कि आप में से भी कुछ ब्रह्मचर्य के पीछे पागल हो रहें। ज्यादा दिन के लिए नहीं तो थोड़े दिन के लिये ही इस ब्रह्मचर्य का आनन्द ले कर देखो। कितना विचित्र आनन्द भरा पड़ा है इसमें। मुझे यह विश्वास है कि यदि एक बार आपने इस रसका आस्वादन कर लिया तो आपको

यह आनन्द आयेगा कि आप इस आनन्द को कभी छोड़ न सकोगे। पुनः कान खोल कर सुन लो, यदि तुम जीवन में सच्चा आनन्द चाहते हो तो तुम्हें यह महाव्रत लेना ही होगा। ब्रह्मचर्य जीवन का आनन्द आहार है।

बस, इस पुस्तक को पढ़ो और मनन करो। इसके पढ़ने से तुम्हारे जीवन में ब्रह्मचर्य की जो ज्योति जले उसे सर्वत्र फैला दो।

बलदेव नैष्ठिक

ब्रह्मचर्य की महिमा

संसार में मानव जीवन का सबसे मूल्यवान रत्न ब्रह्मचर्य है। इस रत्न का मूल्याङ्कन नहीं किया जा सकता–यह रत्न इतना अमूल्य है कि दुनिया की समस्त सम्पत्ति को इकट्ठा कर लेने के बाद भी इस हीरे की तुलना नहीं की जा सकती। इस रत्न के मिल जाने पर मनुष्य मालामाल हो जाता है। विद्या, बल तेज, आयु, यश आदि सभी गुणों का भंडार बन जाता है। वज्र के समान शरीर शेर के समान छाती, सूर्य के समान देदीप्यमान मुखमंडल, मेघ जैसी ध्वनि, हाथी के बराबर मस्ती भरी चाल और सुडौल सुन्दर गठी हुई भुजाओं को देख प्रत्येक व्यक्ति ब्रह्मचारी के आगे झुकता है। चित्रकला मौन राग अलापने लगती है। दर्शक मन्त्रमुग्ध हो जाता है। वक्ता उसके सामने चुप हो जाता है। लेखक की लेखनी रुक जाती है। चक्रवर्ती राजा भी उसके लिए मार्ग छोड़ देता है। संसार के सब देवी-देवता ब्रह्मचारी के पीछे चलते हैं। विद्या, कला, कविता साहित्य और राजत्व से भी आचरण की सभ्यता अधिक ज्योतिष्मति है। मुर्दों को जीवित करने की यह संजीवनी बूटी है। रोगियों के लिये अचूक नुस्खा है। बुद्धि बढ़ाने वालों के लिए ब्राह्मी घृत है, बुढ़ापा दूर करने के लिए च्यवनप्राश है। निस्तेजों के लिए तेज है। पहलवान बनने वालों के लिये सब से बड़ी खुराक है। कुरूपों के लिए सुन्दरता है गाने वालों के लिए तान है। पापों को नाश करने के लिए आग है। शत्रुओं के लिए सुदर्शन चक्र है। निराशों के लिए आशा है। पतितों के लिये पावक है यज्ञिकों के लिए यज्ञ है। तीर्थयात्रियों

के लिए तीर्थ है तपस्वियों के लिए सर्वोत्तम तप है, व्रतियों के लिए महाव्रत है। मोक्ष के जिज्ञासुओं के लिए मोक्ष का द्वार है। मौत को पछाड़ने के लिए ब्रह्मास्त्र है। सिद्धि चाहने वालों के लिए सिद्धि का मूल मन्त्र है। कहाँ तक सुनायें—ब्रह्मचर्य जीवन का प्राण है शक्तियों का आगार है, तेज का पुंज है, आनन्द का स्रोत है, आशा का दीप है, दुखों का विनाशक है, राष्ट्र का गौरव है, सब सुधारों का सुधार है, सफलता की कुञ्जी है, भवसागर से पार उतरने की दिव्य नौका है और क्या कहूं बस यही समझो—यह सर्वस्व है।

वेद-शास्त्र, ऋषि-महर्षियों ने इसकी महिमा गरिमा का गौरव गान गाया है। अनेक महापुरुषों ने इस अनुपम स्वाद को चखा है, इस महातप को तपा है। जिन ऋषियों ने कठोर संयम से अपनी हठीली इन्द्रियों को जीत कर इन्द्रियजीत की पदवी पाई थी—हमारे लिए वे आदर्श के सूर्य हैं। दीर्घकाल की तपस्या के अनन्तर उन्होंने जो अनुभव संसार को दिए हैं वे सदा स्मरणीय रहेंगे। वेदों एवं ऋषियों की कुछ सम्मतियां आपके सम्मुख रखी जाती हैं।

जगतगुरु शंकराचार्य जी महाराज ने ब्रह्मचर्य को सबसे बड़ा तप बताया है। वे कहते हैं—

न तपस्तप इत्याहुर्ब्रह्मचर्यं तपोत्तमम्
ऊर्ध्वरेता भवेद्यस्तु स देवो न तु मानुषः॥

अर्थः—तप करो, तप करो दुनिया चिल्ला रही है। परन्तु तप क्या है ? इसको दुनिया नहीं जानती। कोई एक पैर पर खड़े

से वह आनन्द प्राप्त हुआ है, जिसको लेखनी लिख नहीं सकती और वाणी कह नहीं सकती। जिस दिन से मुझे यह संदेश मिला है, मेरा कुछ का कुछ हो गया है। मुझे पागल बना दिया है इस ब्रह्मचर्य ने। निराली मस्ती है इसमें। मैं यह चाहता हूं तुम भी पागल हो जाओ इसके पीछे। अनूठा आनन्द मिलता है ब्रह्मचर्य के पीछे पागल होने में। यदि एक बार भी तुम इस के पीछे पागल हो गये तो फिर इसे कभी नहीं छोड़ोगे। जो आदमी ब्रह्मचर्य के पीछे पागल नहीं हो जाता वह ब्रह्मचर्य को क्या समझे? पागल बनने वालों ने ही इसका स्वाद चखा है। जब दुनिया के लोग इन्हें पागल कहते हैं तो ये भी कह दिया करते हैं:—

इन पागल दिमागों में भरे खुशियों के लच्छे हैं ॥
हमें पागल ही रहने दो हम पागल ही अच्छे हैं।

There is Pleasure sure in being a mad behind Brahmacharya, which none, but mad men know.

"ब्रह्मचर्य के पीछे पागल बनने में एक अद्भुत आनन्द भरा हुआ है-परन्तु उस आनन्द को वे ही दीवाने जानते हैं और दुनिया का कोई आदमी नहीं जानता।

युवको! मैं चाहता हूं कि आप में से भी कुछ ब्रह्मचर्य के पीछे पागल हो उठें। ज्यादा दिन के लिए नहीं तो थोड़े दिन के लिये ही इस ब्रह्मचर्य का आनन्द ले कर देखो। कितना विचित्र आनन्द भरा पड़ा है इसमें। मुझे यह विश्वास है कि यदि एक बार आपने इस रसका आस्वादन कर लिया तो आपको

वह आनन्द आयेगा कि आप इस आनन्द को कभी छोड़ न सकोगे। पुनः कान खोल कर सुन लो, यदि तुम जीवन में सच्चा आनन्द चाहते हो तो तुम्हें यह महाव्रत लेना ही होगा। ब्रह्मचर्य जीवन का आनन्द आहार है।

बस, इस पुस्तक को पढ़ो और मनन करो। इसके पढ़ने से तुम्हारे जीवन में ब्रह्मचर्य की जो ज्योति जले इसे सर्वत्र फैला दो।

बलदेव नैष्ठिक

ब्रह्मचर्य की महिमा

संसार में मानव जीवन का सबसे मूल्यवान रत्न ब्रह्मचर्य है। इस रत्न का मूल्याङ्कन नहीं किया जा सकता–यह रत्न इतना अमूल्य है कि दुनिया की समस्त सम्पत्ति को इकट्ठा कर लेने के बाद भी इस हीरे की तुलना नहीं की जा सकती। इस रत्न के मिल जाने पर मनुष्य मालामाल हो जाता है। विद्या, बल तेज, आयु, यश आदि सभी गुणों का भंडार बन जाता है। वज्र के समान शरीर शेर के समान छाती, सूर्य के समान दैदीप्यमान मुखमंडल, मेघ जैसी ध्वनि, हाथी के बराबर मस्ती भरी चाल और सुडौल सुन्दर गठी हुई भुजाओं को देख प्रत्येक व्यक्ति ब्रह्मचारी के आगे झुकता है। चित्रकला मौन राग अलापने लगती है। दर्शक मन्त्रमुग्ध हो जाता है। वक्ता उसके सामने चुप हो जाता है। लेखक की लेखनी रुक जाती है। चक्रवर्ती राजा भी उसके लिए मार्ग छोड़ देता है। संसार के सब देवी-देवता ब्रह्मचारी के पीछे चलते हैं। विद्या. कला. कविता साहित्य और राजत्व से भी आचरण की सभ्यता अधिक ज्योतिष्मति है। मुर्दों को जीवित करने की यह संजीवनी बूटी है। रोगियों के लिये अचूक नुस्खा है। बुद्धि बढ़ाने वालों के लिए ब्राह्मी घृत है, बुढ़ापा दूर करने के लिए च्यवनप्राश है। निस्तेजों के लिए तेज है। पहलवान बनने वालों के लिये सब से बड़ी खुराक है। कुरूपों के लिए सुन्दरता है गाने वालों के लिए तान है। पापों को नाश करने के लिए आग है। शत्रुओं के लिए सुदर्शन चक्र है। निराशों के लिए आशा है। पतितों के लिये पावक है। याज्ञिकों के लिए यज्ञ है। तीर्थयात्रियों

के लिए तीर्थ है तपस्वियों के लिए सर्वोत्तम तप है, व्रतियों के लिए महाव्रत है। मोक्ष के जिज्ञासुओं के लिए मोक्ष का द्वार है। मौत को पछाड़ने के लिए ब्रह्मास्त्र है। सिद्धि चाहने वालों के लिए सिद्धि का मूल मन्त्र है। कहाँ तक सुनायें—ब्रह्मचर्य जीवन का प्राण है, शक्तियों का आगार है, तेज का पुंज है, आनन्द का स्रोत है, आशा का दीप है, दुखों का विनाशक है, राष्ट्र का गौरव है, सब सुधारों का सुधार है, सफलता की कुञ्जी है, भवसागर से पार उतरने की दिव्य नौका है और क्या कहूं बस यही समझो—यह सर्वस्व है।

वेद-शास्त्र, ऋषि-महर्षियों ने इसकी महिमा गरिमा का गौरव गान गाया है। अनेक महापुरुषों ने इस अनुपम स्वाद को चखा है, इस महातप को तपा है। जिन ऋषियों ने कठोर संयम से अपनी हठोली इन्द्रियों को जीत कर इन्द्रियजीत की पदवी पाई थी—हमारे लिए वे आदर्श के सूर्य हैं। दीर्घकाल की तपस्या के अनन्तर उन्होंने जो अनुभव संसार को दिए हैं वे सदा स्मरणीय रहेंगे। वेदों एवं ऋषियों की कुछ सम्मतियां आपके सम्मुख रखी जाती हैं।

जगतगुरु शंकराचार्य जी महाराज ने ब्रह्मचर्य को सबसे बड़ा तप बताया है। वे कहते हैं—

न तपस्तप इत्याहुर्ब्रह्मचर्यं तपोत्तमम्
ऊर्ध्वरेता भवेद्यस्तु स देवो न तु मानुषः॥

अर्थः—तप करो, तप करो दुनिया चिल्ला रही है। परन्तु तप क्या है? इसको दुनिया नहीं जानती। कोई एक पैर पर खड़े

होने को तप कहता है, कोई भूखे मरने को तप बतलाता है, कोई अग्नि में तपने को तप बतलाता है—परन्तु स्वामी शंकराचार्य जी महाराज कहते हैं कि ये तप नहीं हैं। ब्रह्मचर्य ही सर्वोत्तम तप है। त्रिलोकी में इससे बड़ा तप नहीं है। जो मनुष्य पूर्ण ब्रह्मचारी है वह देवता है, साधारण मनुष्य नहीं। अखण्ड ब्रह्मचारी देवता के समान होता है। उसकी पूजा करनी चाहिए।

स्वामी शंकराचार्य ने इस सर्वोत्तम तप को तप कर ही विश्व में फैले नास्तिक मतों का विध्वंस करके वेद का नाद बजाया था।

महात्मा गांधी ने कहा—है "जीवन-भवन की आधार-शिला ब्रह्मचर्य है।"

महात्मा सुकरात लिखते हैं—'सदाचार में ही सुख है।'

तिलक जी ने युवकों के नाम सन्देश प्रसारित करते हुए कहा था—"युवको! बल और बुद्धि के बिना अधिकार नहीं मिलते। ब्रह्मचर्य उसका एकमात्र साधन है।"

स्वामी विवेकानन्द जिन्होंने अमेरिका में भारतीय संस्कृति का मन्त्र फूंका, लिखते हैं—ब्रह्मचर्य साधुता है और दुर्बलता पाप है।"

प्रोफेसर राममूर्ति कहते हैं—शास्त्रों के पढ़ने से शारीरिक उन्नति का सबसे सहज उपाय मुझे ब्रह्मचर्य ही सूझ पड़ता है। बालकपन में मैं अत्यन्त दुर्बल और विषयी था। ब्रह्मचर्य के प्रताप से आज भूगोल भर में मेरा नाम प्रसिद्ध है।"

महर्षि दयानन्द जिन्होंने युग को बदला और दुनिया को सच्ची राह दिखलाई, लिखते हैं—ब्रह्मचर्य से शक्ति बुद्धि, तेजस्विता, साहस, स्वास्थ्य, धन और राज्य प्राप्त होता है।

धन्वन्तरि जी महाराज ने इसे सब रोगों का नाश करने वाली, दुःखों को दलने वाली और मृत्यु को भी हराने वाली औषधि बतलाया है। वे लिखते हैं—

मृत्युव्याधिजरानाशि पीयूषं परमौषधम् ।
ब्रह्मचर्यं महद्यत्नं सत्यमेव वदाम्यहम् ॥

वैद्यराज बोले—मृत्यु, व्याधि और जरा का नाश करने वाली, अमृत रूपी औषधि एकमात्र ब्रह्मचर्य है। मैं सत्य कहता हूं इसमें किसी प्रकार का संशय नहीं है। परन्तु एक बात यह है कि ब्रह्मचर्य औषधि बड़े परिश्रम से तैयार होती है।

धन्वन्तरि जी महाराज ने जो एक बात कही है वह वास्तव में अटल सत्य है। हम प्रतिदिन देखते हैं कि जो संयमी सदाचारी हैं, उन्हें रोग, बुढ़ापा और मृत्यु का दुःख नहीं सताता और जो दुराचारी, असंयमी हैं वे सदा रोगी रहते हैं। जवानी में भी बूढ़े के समान रहते हैं और हर क्षण मृत्यु के ग्रास में रहते हैं। संसार में मौत सबसे बड़ा रोग है और सबसे बड़ा दुःख है परन्तु ब्रह्मचर्य का कुठार इसका भी मूलोच्छेदन कर देता है। मौत ही अन्तिम खतरा है। और जो इस खतरे को भी ठोकर से उड़ा दे, इससे बढ़कर हमें क्या चाहिए ? कुछ लोगों को विश्वास नहीं होता कि मृत्यु भी जीती जा सकती है। यह बात दावे के साथ कही जा सकती है कि ब्रह्मचर्य के तप से मृत्यु को भी जीत लिया जाता है। धन्वन्तरि जी की सम्मति

तो मैंने आपको सुना दी है। अब साक्षात् भगवान की वाणी वेद का प्रमाण आपको सुनाता हूं। अथर्ववेद के ब्रह्मचर्य सूक्त में लिखा है—

'ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत'

'देवताओं ने ब्रह्मचर्य के प्रताप से मृत्यु को भी जीत लिया।' यह बात वेद की निर्विवाद सत्य है कि ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्य के प्रताप से मौत का संहार कर देते हैं। इतिहास के अनेक उदाहरण हमारे सामने हैं। ऋषियों ने अरण्यों और पर्वतों की कंदराओं में जाकर अनेक वर्ष ब्रह्मचर्य का घोर तप तपा और इस अखन्ड तप से वे मृत्युञ्जय बन गये। ब्रह्मचर्य बल से मौत को परे धकेलते हुए ये महान तपस्वी मनचाही दीर्घ आयु का सेवन करते रहे। मैं आपके सामने संक्षेप से जगत प्रसिद्ध दो उदाहरण रखता हूं:—

मृत्यु को जीतने वाले ब्रह्मचारी

जब कुरुक्षेत्र के मैदान में खून की होली खेली जाने वाली थी, उस रणाङ्गण में दुनिया के योद्धा अपनी-अपनी ताकत आजमाने के लिए इकट्ठे हो चुके थे, उस समय २०० वर्ष का बाल-ब्रह्मचारी भीष्म कौरवों का सेनापति बन भीषण युद्ध मचाता है। प्रतिदिन दस सहस्र सैनिकों को मौत के घाट उतारता है। दसवें दिन सात महारथी, छः हजार हाथी, पांच हजार रथी, दस हजार घुड़सवार, चौदह हजार पैदल सैना का वध करता है। इस भीषण संहार को देखकर पांडव दल घबरा जाता है। पांडव श्रीकृष्ण जी महाराज को लेकर भीष्म

पितामह की शरण में जाते हैं और गिड़गिड़ा कर अपनी विजय का उपाय पूछते हैं। पांडवों के स्नेह के कारण से ये उनको विजय का मार्ग बतला देते हैं। शिखण्डी को आगे खड़ा करके अर्जुन निहत्थे भीष्म पर तीरों की वर्षा करता है और अपनी वीरता के जौहर दिखाता है। भीष्म का शरीर छलनी छलनी हो जाता है। उस समय उनके शरीर का वर्णन करते हुए महाभारत-कार लिखता है "न तस्यासीदनिर्भिन्नं गात्रेद्व्यङ्गुलमन्तम्" "शरीर पर कोई ऐसा भाग न था जहां तीर न लगा हो।" वे शर-शैय्या पर ही लेट गये, भूमि उनको छू भी न पाई। इस विकट अवस्था में मृत्यु बार-बार खाने को आती है, परन्तु ब्रह्मचारी की ठोकरें खाकर भाग जाती हैं। अब भीष्म की अर्जुन के साथ लड़ाई नहीं थी, अब मृत्यु के साथ लड़ाई हो रही थी। एक तरफ मौत है दूसरी ओर ब्रह्मचारी। दो योद्धा आमने सामने डटे हैं। मौत ब्रह्मचारी को खाना चाहती है और ब्रह्मचारी मौत को। आखिरकार ब्रह्मचारी ने मौत को हरा दिया। ब्रह्मचारी घोषणा करता है कि जब सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायन में आ जायगा उस समय प्राण छोड़ स्वर्गधाम जाऊँगा। हुआ भी ऐसा ही। तीन मास तक वे कौरव-पांडवों को उपदेश देते रहे और जब सूर्य उत्तरायन में आ गया उस समय शरीर छोड़ कर स्वर्गधाम चले गये। यह है मृत्यु को पराजित करना। जो आदमी अपनी इच्छानुसार प्राणों को छोड़ते हैं वे मृत्यु को जीतने वाले कहलाते हैं।

युग-प्रवर्तक बाल ब्रह्मचारी दयानन्द का उदाहरण हमारे सम्मुख है। कौन नहीं जानता उन्होंने मौत को बुरी तरह पछाड़ा था। जीवन में अनेक बार मूर्ख साम्प्रदायी लोगों ने

उनको विष दिया परन्तु विष भी उनका कुछ न बिगाड़ सका। अंत में ७ वीं बार जोधपुर में कांच मिला हलाहल विष दिया गया जिसमें अनेक विषों का मिश्रण था। कहा जाता है वह विष इतना भंयकर था कि उसको खाकर मनुष्य एक मिनट भी जीवित नहीं रह सकता था। स्वामी जी ने न्योली क्रिया के द्वारा विष को शरीर से बाहर निकालने का यत्न किया, परन्तु वह विष बाहर न निकल सका। एक-एक दिन में सैकड़ों दस्त आने लगे। सारे शरीर को विष ने फाड़ डाला। ऋषि का वज्र शरीर जीर्ण-शीर्ण हो गया। ऐसी विकट अवस्था में यमदेवता अपने अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित होकर आ पहुँचा। इस बार मृत्यु देवता अपनी सारी शक्ति से आक्रमण करने के लिये आया था—क्योंकि पहले सोलह बार बुरी तरह मुह की खाई थी। मौत ने पूरी ताकत से ब्रह्मचारी पर धावा किया परन्तु वाह रे ब्रह्मचारी ! तेरे सामने मृत्यु टिक न सकी। तेरी एक ही हुँकार से मृत्यु ने हथियार डाल दिये। इस बार भी मौत की करारी हार हुई। एक मास तक बाल ब्रह्मचारी दयानन्द जन-समूह को अपने उपदेश से कृतार्थ करते रहे। जब यह देखा कि यह पंचभौतिक शरीर विष के कारण से जीर्ण-शीर्ण हो गया है और राष्ट्र के काम का नहीं रहा तो दीपमाला के दिन ईश्वर की स्तुति-प्राथना-उपासना करके, "हे प्रभो ! तू ने अच्छी लीला की। तेरी इच्छा पूर्ण हो" यह कहते हुए स्वेच्छापूर्वक इस नश्वर शरीर का त्याग करके मोक्ष को प्राप्त हो गये। इस दुनिया के लोगों ने अपनी दोनों आँखों से ब्रह्मचर्य का यह अद्भुत चमत्कार देखा। दार्शनिक जगत का महान विद्वान गुरुदत्त एम० ए० इस घटना को देखकर नास्तिक से आस्तिक बन गया।

प्यारे युवको ! ब्रह्मचर्य की शक्ति अजेय होती है। मौत भी

ब्रह्मचारी का बाल बांका नहीं कर सकती। तुम भी भीष्म और दयानन्द के समान ब्रह्मचारी बन कर मौत को पछाड़ने वाले बनो।

भीष्म द्वारा ब्रह्मचर्य का गुण गान

धर्मराज युधिष्ठिर एक बार पितामह भीष्म के पास जाते हैं और हाथ जोड़ कर सविनय प्रार्थना करते हैं—महाराज! आप वेदों के महान विद्वान हैं और संसार के आदर्श ब्रह्मचारी हैं। इस समय हम आप से ब्रह्मचर्य के लाभ सुनने के लिये आये हैं। आप कृपा करके हमें ब्रह्मचर्य के लाभ सुनायें। युधिष्ठिर के प्रार्थना करने पर पितामह ब्रह्मचर्य के लाभ इस प्रकार सुनाते हैं

ब्रह्मचर्यस्य च गुणं शृणु त्वं वसुधाधिप।
आजन्म मरणाद्यस्तु ब्रह्मचारी भवेदिह ॥१॥
न तस्य किञ्चदप्राप्यमिति विद्धि नराधिप।
बह्वयः कोट्यस्त्वृषीणां च ब्रह्म लोके बसन्त्युत ॥२॥

"पितामह भीष्म बोलः—हे राजन! तू ब्रह्मचर्य के गुण सुन। इस संसार में जो आदमी आजन्म ब्रह्मचारी रहता है उसको कोई शुभ गुण अप्राप्त नहीं रहता। इस ब्रह्मचर्य के प्रताप से करोड़ों ऋषि-महर्षि ब्रह्म लाक को प्राप्त कर गये हैं।"

भगवान शिव की सम्मति

जो शिवजी महाराज दुनिया के आराध्य देव माने जाते हैं, जिनका राज्य हरिद्वार से काशी नगरी तक फैला हुआ था -
—जिन की वीरता का लोहा संसार मानता था—उन्होंने

अपनी वीरता और महानता का मूल कारण ब्रह्मचर्य को बतलाया। वे कहते हैं।—

सिद्धे बिन्दौ महारत्ने किं न सिद्धयति भूतले।
यस्य प्रसादान्महिमा ममाप्येतादृशीऽभवत्॥

'ब्रह्मचर्य की कृपा से ही सम्पूर्ण ब्रह्मांड में मेरी यह महिमा फैली है।'' आगे वे कहते हैं:—

"वीर्य के धारण से जगत में कौन-सा ऐसा कार्य है जो सिद्ध नहीं हो जाता?"

ब्रह्मचर्य बल

ब्रह्मचारी बल का भंडार बन जाता है। योगीराज पतञ्जलि जी महाराज ने 'योगदर्शन' में लिखा है—

'ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठायां वीर्य लाभ:'' ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने से अद्भुत शक्ति प्राप्त होती है।

जालंधर में सरदार विक्रमसिंह जी ने स्वामी दयानन्द को कहा कि सुना है ब्रह्मचारी बहुत बलवान होता है।

स्वामी जी—हाँ, शास्त्रों में भी लिखा है और बात भी ठीक है।

विक्रमसिंह—महाराज! आप भी तो ब्रह्मचारी हैं, कुछ प्रमाण दीजिये।

स्वामी जी— कभी दिखा देंगे, यह कह कर चुप हो गये।

सरदार जी दो घोड़ों की बग्गी पर चढ़ कर जाने लगे। साईस ने अपना सारा जोर घोड़ों को हांकने में लगा दिया— परन्तु घोड़े आगे को नहीं चले। पीछे को देखा तो स्वामी जी ने बग्गी को पकड़ रखा है।

स्वामी जी ने बग्गी छोड़ दी और कहा—लीजिये ब्रह्मचर्य का प्रमाण।

सरदार विक्रमसिंह ने स्वामी जी के चरण छू लिये और कहा—महाराज ! मुझे जीवन में आज ब्रह्मचर्य का पूरा प्रमाण मिल गया है।

गुजरांवाले में ब्रह्मचर्य पर भाषण देते हुए स्वामी दयानन्द जी ने पंजाब वासियों को कहा— "सरदार हरिसिंह नलवा जो इतने बलवान हुए, इसका प्रबल कारण उनका ब्रह्मचर्य था। यद्यपि मेरी आयु इस समय ५० वष के ऊपर है, इस आयु में भी मैं घोषणा करता हूं कि कोई बलिष्ट—आदमी जिसे अपनी ताकत पर घमण्ड हो - उठे। मैं उसका हाथ आकर पकड़ता हूं, वह छुड़ा कर दिखाये। या मैं हाथ अकड़ाता हूं—इसे झुका कर दिखाये।" वहां कई काशमीरी पहलवान बैठे थे। किसी की हिम्मत न हुई कि उत्तर दे। यह ब्रह्मचर्य का चमत्कार था।

एक दिन बाल ब्रह्मचारी दयानन्द मार्ग से चले जा रहे थे। मार्ग में कीचड़ में फंसी हुई एक गाड़ी को देखा। किसान बुरा तरह से बैलों को मार रहा था फिर भी गाड़ी दलदल से बाहर नहीं निकल रही थी। दयानन्द से न रहा गया। बैलों को छोड़ने का आदेश दिया। जो गाड़ी दो बैलों से नहीं निकली थी, अकेले ब्रह्मचारी ने निकाल कर पार कर दी।

हनुमान का ब्रह्मचर्य बल

लंका के युद्ध में जिस समय लक्ष्मण मूर्छित हो गये उस समय अञ्जना माता का वीर पुत्र ब्रह्मचारी हनुमान रावण से बदला लेने के लिये चल पड़ा। आकाश में हनुमान को अपनी ओर आते हुए रावण ने देख लिया। रावण ताड़ गया कि यह मेरी मौत का सन्देश आ रहा है। जिस समय हनुमान समीप आया उसी समय रावण ने हनुमान पर पहले ही अपना वार कर दिया। रावण कोई साधारण आदमी नहीं था। वह बहुत ही बली था। तुलसीदास जी ने लिखा है कि रावण के एक ही मुक्के में हनुमान के घुटने जमीन पर टिक गये—परन्तु मूर्च्छा नहीं आई। हनुमान दुगने आवेश में आ गया और उसने खड़े हो कर जोर से रावण को मुक्का मारा। जिस समय रावण को मुक्का लगा तो रावण बेहोश हो कर जमीन पर गिर पड़ा। यह मुक्का बाल ब्रह्मचारी का था, कोई साधारण मुक्का न था। जैसे पर्वत की शिला पर कोई वज्र गिरता है और शिला चकनाचूर हो जाती है—उसी प्रकार से इस मुक्के से रावण की दशा हो गई। कुछ देर के बाद रावण को होश आया। रावण हनुमान की बड़ाई करने लगा। जिस समय रावण हनुमान की बड़ाई कर रहा था—उसी समय हनुमान को दुःख हो रहा था। हनुमान ने रावण को दुःखी हृदय से कहा—'रावण! तुम मेरी क्या बड़ाई करते हो। मैंने आज तक जिस-जिस को मुक्का मारा था—वह इस भूमि पर से दोबारा नहीं उठा था। आज तुम पहले आदमी हो जो मेरे मुक्के से बच गये हो। धिक्कार है मेरे इस मुक्के को! अधिक बड़ाई न करो। यदि मैंने इस बार एक मुक्का और मार दिया तो तुम समाप्त हो जाओगे।

जानु टेक कपि भूमि न परेऊ।
सम्भारि उठा बहुरि रिस भरेऊ॥
मुष्टिक एक तोही कपि मारा।
परई शैल जिमी बज्र प्रहारा॥
मूर्छा गई बहुरि जागा।
कपि बल विपुल सराहन लागा॥
धिक बल धिक् पौरुष मोहिं।
जे तोहि उठा जियत सुर द्रोही॥

इसे कहते हैं ब्रह्मचर्य का बल।

युवको! सुनो! सर्वनाश का मार्ग चुनोगे या कल्याण का? कल्याण और सर्वनाश दोनों तुम्हारे हाथ में हैं। यदि तुम्हें कल्याण की कामना है तो ब्रह्मचारी रहो और नहीं तो सर्वनाश का मार्ग तुम्हारे लिये विस्तृत पड़ा है। चुन लो जो चुनना है।

स्त्री जाति में भी सुलभा, अनुसूया, गार्गी और दुर्गा आदि अनेक ब्रह्मचारिणी हुई हैं जिन्होंने ब्रह्मचर्य के दिव्य तेज से संसार को प्रभावित किया था। ब्रह्मचारिणी दुर्गा के सामने जिस समय महिषासुर राक्षस आया तो दुर्गा ने अपने भाले से उसका काम समाप्त कर दिया और उसे भाले की नोक पर रख कर कहा—ब्रह्मचर्य तेज के सामने दुष्ट लोगों का वश नहीं चलता।

ब्रह्मचर्य की महिमा से भारतीय इतिहास के पन्ने भरे पड़े हैं—परन्तु इन्हें पढ़कर प्रेरणा लेने वालों का अभाव होता जा रहा है। हमारे पूर्वज—ब्रह्मचर्य महिमा को खूब अच्छी तरह जानते थे। वे किसी भी मूल्य पर इसका त्याग नहीं करते थे।

इन्द्र का ब्रह्मचर्य

देवताओं का नेता इन्द्र ब्रह्मचर्य का तप तप रहा था। सब देवता उसके समीप जाकर बोले, "यदि आपको १०० वर्ष की आयु मिल जाये तो क्या करोगे ?"

इन्द्र—ब्रह्मचर्य का पालन करूंगा।

देवता—दो सौ वर्ष की आयु मिल जाये तो क्या करोगे ?

इन्द्र—ब्रह्मचर्य का पालन करूंगा।

देवता—तीन सौ वर्ष की आयु मिल जाये, तो फिर क्या करोगे ?

इन्द्र—ब्रह्मचारी ही रहूंगा।

देवता—चार सौ वर्ष की आयु मिल जाये तो क्या करोगे ?

इन्द्र—ब्रह्मचारी ही रहूंगा।

देवता—चार सौ वर्ष से अधिक आयु होती नहीं। यदि आप चार सौ वर्ष तक ब्रह्मचारी रहोगे तो दुनिया के भोगों का स्वाद कब चखोगे ?

इन्द्र—यदि मुझे एक हजार जन्म मिलें और आये जन्म में ४०० वर्ष की आयु मिले तब भी मैं आये जन्म में आयु पर्यन्त ब्रह्मचारी ही रहूंगा।

देवता—इसमें क्या कारण है ?

इन्द्र—ब्रह्मचर्य में जो आनन्द है—वह अन्यत्र नहीं है।

यह वाक्य सुनकर देवताओं ने जयघोष के बीच इन्द्र पर पुष्प वृष्टि कर दी।

एतरेय ब्राह्मण में इसी प्रकार भारद्वाज मुनि की कथा आती है। महामुनि भारद्वाज को ब्रह्मचर्य की तपस्या करते हुए तीन सौ वर्ष हो गये। एक दिन देवताओं के राजा इन्द्र ने मुनिवर से पूछा, "आपको चार सौ वर्ष की आयु मिल जाये तो क्या करोगे ?" मुनिराज भारद्वाज बोले,—"इन्द्र, मुझे कितनी ही आयु मिल जाये—मैं ब्रह्मचर्य की तपस्या करता रहूंगा।

कितने महान थे हमारे पूर्वज। कितना प्रेम था उन्हें ब्रह्मचर्य से। महाभारत में एक जगह यह लिखा है कि ८८ हजार ऋषि हुए। उनमें से केवल आठ ऋषियों ने विवाह कराया। शेष ८७९९२ ऋषि आजीवन ब्रह्मचारी रहे। महाभारत का वाक्य यह है—

'अष्टाशीतिसहस्राणामूर्ध्वरेतसाम्मुनीनां बभूवुः।'

परन्तु आज के बालक २५ वर्ष तक भी ब्रह्मचारी नहीं रह सकते। जमीन और आकाश का अन्तर हो गया हमारे भूत और वर्तमान में।

ब्रह्मचर्य क्या है ?

जो भोजन हम प्रतिदिन करते हैं वह सब से पहले शरीर में जाकर रस बनता है। रस से रक्त, रक्त से मांस, मांस से मेद, मेद से हड्डी, हड्डी से मज्जा और मज्जा से सातवीं धातु वीर्य बनता है। प्रत्येक धातु के बनने में पांच दिन लगते हैं। इस प्रकार सातवीं धातु वीर्य के तैयार होने में कम से कम एक मास से अधिक समय लगता है। १०० बूंद रक्त से केवल एक बूंद वीर्य तैयार होता है। एक मन भोजन से एक सेर खून बनता है। एक सेर खून से १ तोला वीर्य बनता है। एक बार कुचेष्टा करने से १ तोला वीर्य नष्ट हो जाता है और दस दिन

की आयु घट जाती है। वीर्य की एक बूंद एक मोती से भी अधिक कीमती होती है। यही वीर्य जीवन का सार है, शरीर का राजा है। इसके निकल जाने पर शरीर खोखला हो जाता है। इसके सुरक्षित रहने पर मुख पर लाली, नेत्रों में ज्योति, चाल में स्फूर्ति, शरीर में बल, वाणी में ओज और जीवन में उत्साह भर जाता है। बड़े दुःख की बात है कि इस अमूल्य वस्तु को भी आजकल युवक हस्त-मैथुन, पशु मैथुन, गुदा मैथुन आदि अनेक नीच कर्मों में फंस कर नष्ट करते हैं। ये अपने वीर्य का कुछ भी मूल्य नहीं समझते। इनसे बढ़कर मूर्ख और पागल कौन होगा ?

इन युवकों की दशा उस माली के समान है जो उद्यान से कई मन फूल तोड़ता है, फूल तोड़कर उनका रस निकालता है, रस को भी कई बार खींचकर इतर निकालता है। कई मन फूलों के अर्क से बने इतर से एक शीशी को भर लेता है। जब शीशी भर जाती है तो इसे गन्दी नाली में डाल देता है। हम इस माली को मूर्ख कहेंगे—परन्तु इस माली से आज के युवक अधिक मूर्ख हैं क्योंकि माली तो केवल फूलों के अर्क इतर को ही गन्दी नाली में डालता है—परन्तु ये बालक और बालिकायें तो अपने जीवन रूपी सार ब्रह्मचर्य इतर को ही व्यर्थ बिना किसी प्रयोजन के नष्ट-भ्रष्ट कर देते हैं।

इन अबोध बालकों को यह पता नहीं कि शरीर के अन्दर से वीर्य निकल जाने के बाद यह जीवन बेकार हो जाता है। जैसे सन्तरे से अर्क निकाल लिया जाये तो उसके छिलके का कोई मूल्य नहीं रहता और वे पैरों के नीचे रौंदे जाते हैं, जैसे दूध से घी निकल जाने पर छाछ का कोई मूल्य नहीं रहता,

जैसे साईकल की ट्यूब की हवा निकलने पर साईकल बेकार हो जाती है, बस इसी प्रकार वीर्य के निकलने पर यह शरीर किसी काम का नहीं रहता। जो बालक १५-१६ वर्ष की आयु में ही कामवासना के शिकार हो जाते हैं—उन्हें यौवन के दर्शन नहीं हो पाते। युवा होने से पूर्व ही उन्हें बुढ़ापा आ घेरता है। कलियां खिलने से पहले ही मुर्झा जाती हैं। बसन्त आने से पहले ही पतझड़ आ जाता है। जब उनकी जवानी लुट जाती हैं तब रोते पीटते हैं। फिर क्या होता है ? जवानी जीवन में बार-बार नहीं आती। किसी ने ठीक ही कहा है—

जो जाकर न आये वह यौवन देखा।
जो आकर न जाये वह बुढ़ापा देखा॥

एक बार एक बूढ़ा आदमी जमीन की तरफ कुछ देखता हुआ जा रहा था। मार्ग में कुछ युवकों ने पूछा 'बूढ़े! इस जमीन पर तेरा क्या गिर गया है ? 'बूढ़ा बोला, 'प्यारे बालको! इस भूमि पर मेरी जवानी गिर गई है। मैं उसको ढूंढता हुआ फिर रहा हूं—परन्तु वह कहीं मिल नहीं पाई। मैं तुम से भी कहना चाहता हूं कि कुछ दिनों में तुम्हारी जवानी भी इस जमीन पर गिरने वाली है और तुम भी मेरी तरह ढूंढते फिरा करोगे—परन्तु तुम्हें भी यह जवानी फिर कभी नहीं मिलेगी।'

एक कवि ने इसको अपनी भाषा में यूं कहा—

अधः पश्यसि किं बाले ! पतितं तव किं भुवि।।
रे रे मूर्ख न जानासि ? गत तारूण्यमौक्तिकम्॥

एक मूर्ख—नीचे क्या देखते हो ? भूमि पर तुम्हारा क्या गिर गया ?

दूसरा मूर्ख - तुम नहीं जानते हो। मेरा यौवन रूपी रत्न खो गया है।

दूसरी एक और मनोरंजक घटना सुनिये-हाथ में लाठी लिये एक बूढ़ा आदमी जा रहा था। बुढ़ापे के कारण से वह अधिक झुक गया था। ऐसा प्रतीत होता था मानो तीर-कमान बन गया हो। मार्ग में कुछ मसखरे युवकों ने उसकी मज़ाक उड़ानी चाही-क्योंकि बाल्यकाल में बालकों को यह पता नहीं होता कि कभी तुम्हें भी ऐसा ही बनना है। किसी ने इन युवकों को ठीक ही कहा है—

और चल फिर ले जरा ए बांके नौ जवां।
चार दिन के बाद तेरी टेढ़ी कमर हो जायेगी।

एक बालक ने बूढ़े से कह ही दिया—बूढ़े! यह तीर कमान कितने में खरीदा है?

वृद्ध चतुर था। बोला, "बेटा! कुछ दिन के बाद तुम्हें यह मुफ्त ही मिल जायेगा।" कितने कमाल की बात कही। जो बालक अपने ब्रह्मचर्य को विषयों में गंवा देते हैं वे बहुत जल्दी तीर-कमान बन जाते हैं। हाय! कितने दुःख की बात है। जीवन में ब्रह्मचारी रहने का समय केवल एक बार-निश्चय से एक बार आता है!—परन्तु भाग्यहीन बालक इसे भी खो देते हैं।

काम विजय

वीर्य शरीर में नौ-दस साल की आयु में उत्पन्न होना प्रारम्भ होता है। सोलह साल की आयु में खूब बढ़ता है। यह

समय मनुष्य जीवन में बड़ा भयंकर होता है। इसी समय काम-देवता अपना मुख दिखलाता है। प्रायः सभी बालक इस आयु में काम-वासना में फंस जाते हैं। कोई एक-आध भाग्यशाली बालक ही बचता है। प्रारम्भ में बुराई भी भलाई प्रतीत होती है। बालक कंकरों को हीरे समझ कर झोली भर लेते हैं। विष को अमृत समझ कर खा बैठते हैं। परन्तु जब होश आता है तो रोते हैं। इन बालकों को यह पता नहीं कि कामुकता के जो विचार तुम्हें पहले-पहले प्यारे लग रहे हैं ये तुम्हारे जीवन के सबसे बड़े घातक हैं। काम मानव का सबसे बड़ा शत्रु है। काम मनुष्य को अन्धा बना देता है। काम की आंखें नहीं होतीं। इसे नेत्रहीन कहा जाता है। "Cupid is blind", मनीषियों का कथन है कि उल्लू तो दिन में नहीं देखता—परन्तु कामी पुरुष न दिन में देखता है और न रात्रि को। यह काम बड़े-बड़े तपस्वियों की तपस्या को पलभर में नष्ट कर देता है।

कुवासनाओं के पैदा होने से मन में चंचलता पैदा होती है। जिनका फल यह होता है कि या तो जागते हुए ही जान-बूझ कर बालक अपना वीर्यपात कर लेता है या कुवासना जन्य दुःस्वप्नों के कारण रात्रि में सोते हुए स्वप्नदोष के द्वारा उसका वीर्य शरीर से बाहर निकल जाता है। शृंगारित विचारों के सोचते रहने से कामोत्तेजना बढ़ जाती है और यह कामाग्नि शरीर की धातु को इतना पिघला देती है कि धातु स्वयं पानी की तरह शरीर से बाहर निकल जाती है। कामुकता में फंसा हुआ आदमी काम की तृप्ति के लिए बीसियों प्रकार के घृणित वीर्यपात के मैथुन करता है। इस प्रकार करते-करते एक दिन उसका मन विषयों का इतना दास हो

जाता है कि यदि अब वह अपने मन को विषयों से रोकना भी चाहे तो रोक नहीं सकता। ऐसे आदमी की दशा मरे हुए से भी बुरी होती है। मरे हुए को कोई कष्ट सहन नहीं करना पड़ता, परन्तु ऐसे विषयी लोगों को कौन-सा क्लेश है जो प्राप्त नहीं होता ? वह रात-दिन रौरव नरक में सड़ता है। इसे मधु मेह, प्रमेह, भगंदर; तपेदिक और कैंसर आदि अनेक भयंकर रोग आ घेरते हैं। इसका जीवन जीवन नहीं रहता।

कुछ बालक यह सोचा करते हैं कि एक बार भोग का मजा ले लें। फिर इसे छोड़ देंगे। इन नादानों को इस बात का पता नहीं है, कि एक बार विषयों में फंसकर फिर छूटना बड़ा कठिन है। एक बार कोई काम करने के बाद यह मन बार-बार वहीं जाता है। विषयों से बचने का उपाय यही है कि वह अपने मन को प्रारम्भ से ही उधर न जाने दे। उस रस की चाट मन को न लगने दे। इस रस की चाट लग जाने के बाद बड़ी कठिनता से छुटकारा हो सकेगा और वह भी बड़ी हानि उठाने के बाद। इस लिए इन शृंगारित विचारों को उत्पन्न ही नहीं होने देना चाहिए।

कुछ लोग यह सोचते हैं कि भोग-भोगने के पश्चात् वासनायें अपने आप शान्त हो जायेंगी, परन्तु बात ऐसी नहीं होती। भोग-भोगने के बाद वासनायें और भड़क जाती हैं, शान्त नहीं होतीं।

ऋषियों ने कहा है :—

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते ॥

जैसे अग्नि में घी डालने से अग्नि शान्त नहीं होती—अपितु और बढ़ती जाती है, इसी प्रकार विषयाग्नि में विषयों की आहुति डालने से विषयों की आग और ज्यादा भड़कती है।

किसी ने ठीक ही कहा है—

विषयों से मन को तृप्त कराना नहीं अच्छा।
जलती अग्नि घी से बुझाना नहीं अच्छा॥

भर्तृहरि जी लिखते हैं—

"भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता।"

अर्थात् भोग तो नहीं भोगे गये, भोगों ने ही हमें भोग डाला।

सूखी हड्डी को चबा कर कुत्ता आनन्द मनाता है—यह नहीं समझता कि यह रक्त तेरे ही मुख से निकल रहा है—और तेरा ही नाश हो रहा है। यही अवस्था हमारे युवकों की है। अपने नाश को इन्होंने मजा मान रक्खा है। बड़े गर्व से आज का युवक कहता है, "Eat drink and be merry." खाओ, पीओ और मजे उड़ाओ।' परन्तु मैं इन्हें कहता हूं, "You can eat, you can drink but you cannot be merry." "तुम खा सकते हो, तुम पी सकते हो, परन्तु तुम आनन्द नहीं ले सकते।" क्योंकि तुम आनन्द के स्रोत को नहीं जानते। तुम ने विषयों में आनन्द समझ रक्खा है, परन्तु विषयों में आनन्द नहीं है। परन्तु क्या कहें इन कामान्धों को। ये गधे के समान हैं। गधी की लातों से गधे का मुख लहु-लुहान हो जाता है, परन्तु गधी का पीछा नहीं छोड़ता। विषयों के पीछे विषयी

मानव का सर्वस्व नष्ट हो जाता है—परन्तु अपनी विलासिता का त्याग नहीं करता। किसी भी विषय में फँस कर उससे निकल जाना बड़ी भारी बहादुरी का काम है। वास्तव में काम को जीत लेना सबसे बड़ी वीरता है।

भर्तृहरि जी कहते हैं—

मत्तेभ कुम्भ दलने भुविसन्ति शूराः,
केचिद् प्रचण्ड मृगराज वधेऽपि दक्षाः।
किन्तु ब्रवीमि बलिनां पुरतः प्रसह्य,
कंदर्प दर्प दलने विरलाः मनुष्याः ॥

'मस्त हाथियों को वश में करने वाले शूरवीर संसार में बहुत हैं, जंगल के राजा शेर को मारने वाले भी बहुत हैं—परन्तु इन बलवानों के सामने मैं कहना चाहता हूं, काम को वश में करने वाला कोई विरला ही होता है।"

भर्तृहरि जी यह कहना चाहते हैं कि दुनिया वालो ! हाथी को जीता तो क्या जीता ? शेर को जीता तो क्या जीता ? हम तो तब जानें जब कोई मानव काम को जीत ले। इस बात को सुनकर संसार के लोग घबरा जाते हैं। यह कहते हुए सुनाई देते हैं कि यह कार्य तो बहुत कठिन है। यह बात उनकी सत्य भी है—परन्तु यह भी सत्य है कि उच्च पथ के राही कठिनाई से नहीं डरते। वीर की परीक्षा तो कठिन कार्य में ही होती है। यदि काम को जीतना और ब्रह्मचारी रहना कठिन न होता तो इसका महत्त्व ही क्या होता ? फिर तो सभी ब्रह्मचारी बन जाते। शहर के महा आलसी ८ बजे उठने वाले लोग भी ब्रह्मचारी बन जाते। फिर जंगलों में जाने की, घर-बार छोड़ने की

और लंगोट लगाने की क्या जरूरत रहती ? ब्रह्मचर्य की महिमा ही इसलिये है कि यह कठिन कार्य है। इसी लिये किसी ने बहुत ही अच्छा कहा है :-

वह पथ क्या पथिक, कुशलता क्या,
जिस पथ में बिखरे शूल न हों।
नाविक की धैर्य परीक्षा क्या,
जब धारा ही प्रतिकूल न हो॥

यह बात समझ लेनी चाहिए कि काम को जीतना कठिन अवश्य है—परन्तु असम्भव नहीं। काम को जीतने वाली सूची में अनेक महापुरुषों ने अपना नाम लिखाया है।

काम को जीतने के उपाय

पहला उपाय:—

कामदेव से घृणा:—मनुष्य को विष से स्वाभाविक घृणा होती है। जब यह पता चल जाता है कि दूध में विष मिला हुआ है तो उस समय मनुष्य विषके कारण दूध को नहीं पीता। यदि हमारे सामने कोई सुअर आ जाता है तो हम उसे भगा देते हैं, पसन्द नहीं करते क्योंकि हमें उससे घृणा होती है। हमारे सामने टट्टी से लथ-पथ होकर कोई मानव आ जावे तो उसे भी हम देखना नहीं चाहते क्योंकि हमें इससे भी स्वाभाविक घृणा होती है। इसी प्रकार यदि हमें काम से भी स्वाभाविक घृणा हो जाये तो हम काम से बच सकते हैं। काम से घृणा क्यों की जाये ? इसलिए कि काम सब बुराइयों का घर है। कामदेव कभी अकेला नही आता। दुनियां की सारी बुराई इस के साथ आती हैं। कामदेव के पीछे लाठियों वाले

कीचड़ वाले. जूतों वाले भी आते हैं। एक मिनट के दुराचार से सारी आयु की तपस्या भंग हो जाती है। इससे मनुष्य सब जगह बुरी तरह बदनाम हो जाता है। एक बार के व्यभिचार से मनुष्य के ऊपर वह काला धब्बा लग जाता है जो कभी नहीं मिटता। कामदेव से कभी किसी भी शर्त पर समझौता नहीं करना चाहिए। इस से प्यार किया और मानव मरा। जब भी कामदेव आये, उसे ललकार कर कहो, 'ओ मन के पाप ! दूर चला जा, एकदम चला जा; मैं तुझको बिलकुल नहीं चाहता।" कामदेव से बचने का सबसे बड़ा उपाय यही है कि जब भी कामदेव दरवाजा खट-खटाये, उसे वहीं रोक दो। उसे शत्रु की भांति धक्के देकर बाहर धकेल दो। याद रखो, यदि कामदेव का तुम्हारे घर में एक बार भी आना-जाना हो गया तो इसके भयंकर परिणाम होंगे !

दूसरा उपायः—

प्राणायामः—जब कामदेव सारी सेना को लेकर तुम्हारे ऊपर चढ़ आये और तुम खतरनाक स्थिति में हो—उस समय यदि तुम सुरक्षित रहना चाहते हो तो एक काम यह करो— 'अपने सारे प्राण को बल-पूर्वक बाहर निकाल दो और इतना रोक दो कि सारी नस-नाड़ियां कांप जायें, ऐसा लगे कि मैं मरा।" बस, १ या २ श्वास के बाहर रोकने से ही आपकी सब उत्तेजना समाप्त हो जायेगी। विषय की जो काली-काली मेघ-मालायें आपके ऊपर मंडरा रही थीं वे सब एक मिनट में ही साफ हो जायेंगी।

तीसरा उपायः—

खाली मत रहोः—खाली मन शैतान का घर होता है। कहा भी है— "Empty mind is the devil's workshop."

महर्षि स्वामी दयानन्द जी से एक बार कलकत्ते में अश्विनि कुमार ने पूछा—महाराज ! क्या आपके मन में कभी काम विकार नहीं आता ? स्वामी जी ने उत्तर दिया—नहीं। पुनः अश्विनि कुमार ने पूछा—महाराज इसका कारण क्या है ? स्वामी जी ने कहा—मुझे काम के लिए फुरसत नहीं है।

चौथा उपायः—

जब मन में काम-वासना आये तो उस समय यह विचार करो कि अनेक बार मैंने पहले ये भोग भोग लिये हैं—परन्तु अब तक मन की तृप्ति नहीं हुई है। यदि इस बार भी भोग भोग लिया तो क्या हो जायेगा ? मन की तृप्ति तो होती नहीं। क्योंकि यदि इसकी तृप्ति होती तो अब तक हो जाती।

पांचवां उपायः—

भोग के परिणाम पर विचारः—संसार के प्रत्येक भोग के पश्चात् दुःख और पश्चाताप होता है। जब मन में काम-वासना आये तो इस परिणाम का बार-बार चिन्तन करें।

छठा उपायः—

जब कामदेव हमें विलोड़ित करने के लिये आ जाये तो उस समय हमें मन में यह सोचना चाहिए कि इस कामदेव के चक्कर

में सारा संसार बुरी तरह से फंस रहा है और भारी दुःख पा रहा है। मुझे इस रहस्य का अन्दर से खूब पता चल गया है। मैं बड़ा सौभाग्यशाली हूं।—मैं ही इसके जाल में नहीं फसूंगा। इसी एक बात में मैं सारी दुनिया से बहादुर हूं। मैं एक विशेष मानव हूं। मैं एक विशेष मानव हूं। मैं एक विशेष मानव हूं।

सातवा उपाय—

कामोत्तेजना पैदा होने पर शीतल जल से स्नान करें।

आठवां उपाय—

किसी महापुरुष की सतसंगति में पहुँच जायें।

नवां उपाय—

कभी एकान्त-वास न करें।

दसवां उपाय—

जोर-जोर से ओ३म की ध्वनि गुंजायें। जमीन पर घुटने टेक कर परमात्मा से रक्षा के लिये प्रार्थना करें। काम को परास्त करने के लिये प्रभु-प्रार्थना अचूक नुस्खा है। कहा भी है—

विषय का विषधर जब डसे, ओ३म् जड़ी को ले चबाय।
नाग दमन है यह औषधि, ढूंढन दूर न जाय॥
उपशम होंवे वासना, मन के मिटें विकार।
यदि विधि से यह लीजिये, नाम अमोल अपार॥

बस, जिसने काम को जीत लिया वह ब्रह्मचर्य की परीक्षा में पास हो गया। अगर तुम ने यह परीक्षा देनी है तो काम को जीतने की तैयारी करनी पड़ेगी। यह भी समझ लेना चाहिये कि जीवन की यह सबसे बड़ी परीक्षा है। इसके मुकाबले में बी० ए०, एम० ए०, शास्त्री, आचार्य और पी-एच० डी० आदि परीक्षायें कुछ भी नहीं हैं। एम० ए० पास चरित्र हीन बाबू जी का इस स्थान पर इतना महत्व है, जितना कि अ-आ सीखने वाले विद्यार्थी का। मैं तो चरित्र की परीक्षा में पास हुए बिना अन्य सब परीक्षाओं में भी फेल ही मानता हूं और दावे के साथ राष्ट्रवासियों को यह घोषणा करता हूं कि जब तक यह नियम नहीं बन जायेगा, तब तक राष्ट्र का उद्धार नहीं हो सकता।

मैथुन या सर्वनाश

वीर्य नाश करने वाले साधन को मैथुन कहते हैं। हमारे शास्त्रों में आठ प्रकार के मैथुन बताये गये हैं और उनसे बचने को ही ब्रह्मचर्य कहा है। वे मैथुन ये हैं—

स्मरणं कीर्तनं केलिः प्रेक्षणं गुह्यभाषणम्।
संकल्पोऽध्यवसायश्च क्रिया निष्पत्तिरेवच ॥
एतन्मैथुनमष्टांगं प्रवदन्ति मनीषिणः।
विपरीतं ब्रह्मचर्यमनुष्ठेयं मुमुक्षुभिः ॥

(१) किसी स्त्री या पुरुष का कामुकता के साथ स्मरण करना।
(२) उसके रूप आदि गुणों का वर्णन करना।
(३) स्त्रियों के साथ खेलना।

(४) स्त्रियों को बुरी दृष्टि से देखना।
(५) उनसे एकान्त में बातें करना।
(६) स्त्री को प्राप्त करने के लिये मन में संकल्प करना।
(७) स्त्री को प्राप्त करने लिये पूर्ण प्रयत्न करना और
(८) साक्षात भोग करना।

ये आठों मैथुन ब्रह्मचर्य के महान् शत्रु हैं। इन आठ मैथुनों में फंसा व्यक्ति सात जन्मों में भी ब्रह्मचारी नहीं रह सकता। इन मैथुनों में से कोई एक भी वीर्य नाश करने में पर्याप्त है और जहा ये सारे मैथुन इकट्ठे हो जाते हैं वहां तो कहना ही क्या ?

इन आठ मैथुनों के अतिरिक्त आजकल और भी कई भयंकर मैथुन बालकों का नाश कर रहे हैं। जिन में हस्त मैथुन, गुदा मथुन और पशु मैथुन आदि हैं। इन मैथुनों में हस्त मैथुन सबसे भयंकर है। इस मैथुन का अत्यधिक प्रचलन हो गया है। यह राक्षस बालकों और युवकों का बुरी तरह संहार कर रहा है। देश के होनहार बालक इसने मिट्टी में मिला दिये हैं। जिस प्रकार घुन लकड़ी को खा जाता है, उसी प्रकार यह रोग घुन बन कर नव-युवकों को खा रहा है। जो बालक एक बार भी हस्त मैथुन कर लेता है उसे यह शैतान इस प्रकार पकड़ लेता है कि उसे कभी भी नहीं छोड़ता। करोड़ों में कोई एक-दो बालक भाग्यशाली होगा जो अपने जीवन में इस पाप कर्म से बच जाये। इस मैथुन में फँस कर जो मानव इसमें से निकल जाता है. वह बहुत बहादुर है। प्यारे युवको! जब भी कभी कोई तुम्हें इस मैथुन का पाठ पढ़ाये तो तुम उसे अपना शत्रु समझना—वह तुम्हारा मित्र नहीं है। वह तुम्हारा

नाश करना चाहता है, तुम्हें गिराना चाहता है। तुम उसके चंगुल में मत फँसो, ऐसे नीच की बातें किसी शर्त पर मत मानो। उसके पास बैठना भी छोड़ दो। उससे सदा दूर रहो।

इन मैथुनों से शरीर की शक्ति नष्ट हो जाती है, शरीर दुर्बल हो जाता है, गाल पिचक जाते हैं, आंखों पर चश्मा चढ़ जाता है, चेहरा पीला पड़ जाता है, स्मरण शक्ति समाप्त हो जाती है, पढ़ा हुआ भूल जाता है, सिर में दर्द रहने लगता है, कमर झुक जाती है, छाती बैठ जाती है, खांसी, नज़ला, क्षय, यक्ष्मा, मृगी, मूर्छा पागलपन, बवासीर और भगंदर आदि रोग आ घेरते हैं। आयु भी घट जाती है। पागलखानों में अधिकतर इस व्यसन के मारे हुए लोग रहते हैं। वीर्य नाश का दुष्परिणाम भयंकर रोगों की उत्पत्ति है। प्रमेह आदि ऐसे रोग उत्पन्न हो जाते हैं जिनसे सारे जीवन का खेल बिगड़ जाता है। ऐसे व्यक्ति का सारा जीवन दुःखमय व भार रूप हो जाता है। थोड़ी सी भूल का भगवान यह उसे दंड देता है कि उसका भावी जीवन बर्बाद हो जाता है। जब इनका नाश हो जाता है। तब ये नव-युवक छुप-छुप कर वैद्य हकीम डाक्टर के पास जाते हैं। अखबारों में दवाइयों के विज्ञापन बड़ी गौर से पढ़ते हैं। साधु-महात्माओं के पास जाकर भी हाथ जोड़ते हैं। कोई मदन मंजरी की गोली मंगाता है, कोई धातु पुष्टि की गोलियों के आर्डर भेजता है, कोई वीर्य वटिका चाहता है, कोई नपुंसकारिघृत का सेवन करता है, कोई स्वप्नदोष चूर्ण अमृत खरीदता है। कहीं शतावर, गोखरू तालमखाना असगंध नागौरी, गंगेरण और खरैंटी के बीज कूटे जा रहे हैं, कहीं वीर्यवर्धक पाक बन रहे हैं, कहीं पर शंखपुष्पी पर रगड़े चढ़ रहे हैं, कहीं ब्राह्मी

घोटी जा रही है, कहीं गोलियां बन रही हैं, कहीं इन्जेक्शन लग रहे हैं।

आजकल वैद्य और डाक्टरों की भी आंधी आ गई है। घर-घर में वैद्य वैठे हैं। जिसके मन में आता है वही शीशी उठा कर चल पड़ता है। इतने मरीज नहीं जितने डाक्टर हैं। समाचार पत्रों में भी विज्ञापनों का कमाल हो रहा है। कोई लिखता है बूढ़ा भी जवान हो गया। कोई कहता है मुर्दा भी जिन्दा हो गया। कोई कहता है निराश मत हूजिये। कोई कहता है मुफ्त मंगाकर देखिये।

ओ संसार के भोले युवको! कान खोल कर सुनो। दुनिया की कोई ऐसी औषधि नहीं है जो वीर्यहीन को वीर्यवान बना दे। यदि दुनिया की सारी औषधियां घोट कर एक साथ पी ली जायें तब भी ब्रह्मचर्य की सिद्धि नहीं हो सकती। ब्रह्मचर्य ऐसी चीज नहीं कि ऐरे-गैरे नत्थू-खैरे की कुटी-कुटाई, पिसी-पिसाई औषधि से सिद्ध हो जाये। इन नुस्खों और दवाइयों के पीछे पड़कर मनुष्य व्यर्थ में अपना तन मन और धन बुरी तरह से नष्ट कर लेता है। इन दवाओं से शरीर को और भी ज्यादा हानि होती है। ये वैद्य डाक्टर अधिकतर ठग व लुटेरे हैं। बचा जाये तो इनसे बचो। यदि दवाओं से कोई ब्रह्मचारी बनता तो सबसे पहले डाक्टर और वैद्य ब्रह्मचारी बन जाते। परन्तु ऐसा नहीं है। आज तक दुनिया में कोई ऐसी दवाई या इन्जैक्शन नहीं है— जो वीर्य को बाहर जाने से रोक दे। कोई भाई धोखे में न रहना। ब्रह्मचर्य का मन से सम्बन्ध है। ब्रह्मचारी बनने का एक ही मार्ग है। वह यह कि सच्ची श्रद्धा और लगन से सब मैथुनों का त्याग करके मन को पवित्र रखे और ब्रह्मचर्य रक्षा के साधनों का विधिवत्

पालन करे। इससे अलग कोई दूसरा इसका मार्ग नहीं है।

ब्रह्मचर्य के साधन

१. शुद्ध विचार:—यह ब्रह्मचर्य का सबसे बड़ा साधन है। विचारों की पावनता के बिना ब्रह्मचर्य रक्षा असम्भव है। वीर्य शरीर में इतना सुरक्षित है कि शरीर पर कितना ही तेज प्रहार किया जाये, शरीर से वीर्य बाहर नहीं निकल सकता। त्वचा कट जायेगी, रक्त निकल जायेगा, मांस कट जायेगा, हड्डी कट जायेगी, परन्तु वीर्य बाहर नहीं निकलता। गन्दे विचारों के एक ही प्रहार से एक ही पल में वीर्य शरीर से बाहर निकल जाता है। ब्रह्मचर्य का सीधा सम्बन्ध मन से है। मन के शुद्ध किये बिना कोई भी वीर्य रक्षा नहीं कर सकता— चाहे कोई कितने ही पापड़ वेले। इसलिए गन्दे विचारों की जड़ नाविल उपन्यास, सांग, सिनेमा नाटक नाच, रामलीला, सरकस और ड्रामे आदि का सर्वथा त्याग कर देना चाहिये।

२. प्रातः जागरण: -ब्रह्मचर्य के प्रेमी को ठीक दस बजे सोकर चार बजे अवश्य उठ जाना चाहिये। जो व्यक्ति घण्टे से ज्यादा सोता है वह ब्रह्मचारी नहीं रह सकता। ४ बजे के बाद सोते रहने वाले को स्वप्नदोष आदि रोग लग जाते हैं। स्वप्न दोष का सबसे बड़ा इलाज सुबह ३ बजे उठना है। ब्रह्मचारी के लिए दिन में सोना मना है। निद्रा पर अधिकार कर लेने से ब्रह्मचर्य की आधी समस्या दूर हो जाती है। सदैव अकेले ही सोना चाहिये।

व्यायाम:—प्रातःकाल ४ बजे उठकर शौच, दन्त-धावन से निवृत्त होकर नित्य प्रति व्यायाम अवश्य करना चाहिये। व्यायाम

ब्रह्मचर्य का प्राण है। व्यायाम के बिना स्वस्थ रहना असम्भव है। जो मानव यह कहते हैं कि व्यायाम के लिए समय नहीं मिलता उन्हें यह बात पल्ले की गाँठ से बाँध लेनी चाहिये कि "If you cannot find time to exercise, you must have to find time to fall ill" अर्थात् 'यदि तुम व्यायाम के लिए समय निकाल कर नहीं रखते हो तो तुम्हें बीमारी के लिए पहले ही समय निकाल कर रखना चाहिए।"

आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रन्थ में व्यायाम के लाभ इस प्रकार से वर्णन किये गये हैं—

लाघवं कर्म सामर्थ्यं विभक्त-धन-गात्रता।
दोषक्षयोऽग्नि-दीप्तिश्च व्यायामदुपजायते ॥
व्यायाम—दृढ़ गात्रस्य व्याधिर्नास्ति कदाचन।
विरुद्धं वा विदाधं वा भुक्तं शीघ्रं विपच्यते ॥

अर्थः—व्यायाम से शरीर हल्का और चुस्त बन जाता है। कठिन से कठिन कार्य को करने का सामर्थ्य उत्पन्न हो जाता है। शरीर भरा हुआ, सुन्दर व सुडौल बन जाता है। वात-पित्त और कफ दोषों का क्षय हो जाता है। जठराग्नि प्रदीप्त रहती है शरीर वज्र के समान कठोर बन जाता है। बीमारी कभी पास नहीं फटकती। भूख का यह हाल होता है कि लक्कड़-पत्थर सब हजम हो जाते हैं।

भगवान ने हमें कमजोर और रोगी नहीं बनाया। हम अपने आलस्य प्रमाद और दूषित आचरणों से कमजोर और बीमार होते हैं। कमजोर और बीमार होना पाप भी है। कहा

भी है - "To be weak is a great sin" दुर्बल होना एक बड़ा पाप है "Victory and happiness go to strong" अर्थात् सुख और यश बलवान को ही मिलते हैं। जिसका शरीर दुर्बल है, उसका मन, मस्तिष्क और आत्मा भी निर्बल होता है। शास्त्रों ने शरीर को ही धर्म का प्रमुख साधन माना है।— "शरीर माद्यं खलु धर्म साधनम्।"

स्वास्थ्य का मूल मंत्र व्यायाम है। स्वास्थ्य बोतलों में नहीं है। बड़े दुःख की बात है, आज व्यायाम-शालायें और अखाड़े खाली पड़े हैं। सिनेमा घरों में भीड़ लगी रहती है। आज के इस बाबू जी को थोड़ी सी मिट्टी लग जाये तो पोजीशन में फरक पड़ जाता है। ऐसे नपुंसको से आज यह देश भरा पड़ा है। यदि इन युवकों को व्यायाम के लिए कहा जाये तो वे कह देते हैं कि हमारे पास समय ही नहीं है। इनके पास सांग-सिनेमा देखने को, ताश-चौपड़ खेलने को, बीड़ी-सिग्रेट पीने और गप्पें मारने के लिए तो समय है—परन्तु व्यायाम के लिए नहीं है। आज के युवक म्यूजिक कान्फ्रेंसों में और सिनेमाघरों में अपने बल और शक्ति को स्वाहा कर रहे हैं। आज इस बात की बड़ी भारी आवश्यक्ता है कि देश में जगह जगह व्यायामशालायें खुलवाई जायें और व्यायाम का भारी प्रचार किया जाय।

व्यायाम में सदा इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि कभी भी दूसरों से मालिश न कराई जाय। दूसरे के शरीर को छूना ब्रह्मचर्य के लिए विष के समान है। इसीलिये ब्रह्मचारी के लिये कुश्ती करना भी अच्छा नहीं है। मेरा विचार है कि कुश्ती करने वाला व दूसरे से मालिश कराने वाला ब्रह्मचारी नहीं रह सकता।

४. प्राणायाम—व्यायाम के बाद स्नान करे फिर संध्या एवं प्राणायाम भी जरूर करे। प्राणायाम ब्रह्मचारी का सर्वस्व है। वह ऋषियों की वह गुप्त विद्या है जिससे वीर्य की ऊर्ध्व गति हो जाती है। प्राणायाम के बिना ब्रह्मचारी रहना नितान्त कठिन है। जिसे अखण्ड ब्रह्मचारी रहने की इच्छा हो उसे प्राणायाम जरूर सीख लेना चाहिए। ■

५. लंगोट बांधना:—ब्रह्मचर्य के अभिलाषियों को सदा रात दिन लगोट बंद रहना चाहिए। लंगोट बांधना ब्रह्मचर्य के लिए बहुत बड़ा साधन है। कुछ आदमी लगोट के विषय में यह शंका करते हैं कि लंगोट बांधने स मनुष्य नपुंसक हो जाता है। परन्तु यह बात एकदम गलत है। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि लंगोट से किसी भी प्रकार की हानि नहीं होती। इसके बाँधने से लाभ ही लाभ होता है। प्राय: यह शंका उन लोगों की ओर से की जाती है जो कभी लंगोट नहीं बांधते। वे स्वयं ब्रह्मचारी नहीं बनते और न दूसरों को बनने देना चाहते हैं। लंगोट बांधे बिना ब्रह्मचारी रहना असम्भव है। ऋषियों ने कहा है जो कोपीन बाँधता है वह भाग्यशाली है। "कोपीनवन्तः खलु भाग्यवन्तः" ब्रह्मचर्य प्रेमी को भूलकर भी पैंट और पैन्टकट पाजामे धारण नहीं करने चाहियें।

(६) शुद्ध भोजन:—"जैसा खाये अन्न वैसा बने मन" इस

नोट.—■ व्यायाम, प्राणायाम दोनों हो किसी अनुभवी से सीख करके ही करने चाहिएं। इन दोनों को सीखने के लिए वैदिक योगाश्रम शुकताल (जि० मुजफ्फरनगर) का पता नोट कर लो। वहाँ जाकर हर कोई सीख सकता है।

लोकोक्ति के अनुसार भोजन से ही मनुष्य के विचार बनते हैं। अपवित्र भोजन करने वाला कभी भी पवित्र विचार नहीं रख सकता। ब्रह्मचर्य की साधना में भोजन का बहुत बड़ा हाथ है। दूध, दही, मक्खन, घी, शाक, सब्जी, फल और रोटी चावल, दाल, सर्वश्रेष्ठ भोजन है परन्तु आज देश में अण्डे मांस, शराब आदि अभक्ष्य चीजों का प्रचलन हो गया है जिनको खा कर मनुष्य सात जन्म में भी ब्रह्मचारी नहीं रह सकता। मिर्च, खटाई, लहसुन, प्याज, बैंगन, तेल, की चीजें, अचार, चटनी सोडा वाटर, बर्फ, चाय, काफी, कहवा, हुक्का-बीड़ी, सिग्रेट गांजा, अफीम, चण्डू, भंग आदि सभी वस्तुएँ ब्रह्मचर्य के लिए घातक हैं। यदि ब्रह्मचर्य से प्यार है तो इन्हें भूल कर भी न छूएं। बीड़ी, सिग्रेट और शराब ने तो देश के युवकों का बुरी तरह नाश कर दिया है। इन्हें इतना भी पता नहीं कि कहाँ तो ये नशे और कहां वीर्य रक्षा? इन नशों को करने वाला यदि वीर्य रक्षा करना चाहता है तो समझो वह वर्षा की बूंदों को पकड़ कर आकाश में चढ़ना चाहता है।

(७) सरलता:—सरलता ब्रह्मचर्य की जननी है और शृंगार व्यभिचार का दूत है। फैशन और ब्रह्मचर्य की परस्पर शत्रुता है। फैशन बनाने वाला कभी ब्रह्मचारी नहीं बन सकता। बाल बनाना, तेल-फुलेल लगाना, सुन्दर कपड़े पहनना एवं इसी प्रकार के अन्य शृंगार करना ब्रह्मचर्य के मार्ग से भ्रष्ट होना है। शृङ्गार की भावना ही मन में उस समय पैदा होती है जिस समय मन में दूषित विचारों का अंकुर उत्पन्न हो जाता है। ऐसे शृङ्गारी आदमी को काम बुरी तरह से पटक-पटक कर मारता है। हमारे शास्त्रों में विशेष रूप से विद्यार्थियों को त्यागी

और तपस्वी होने का आदेश है। विद्यार्थियों को वेषभूषा सादी रहनी चाहिए। लेकिन इस नियम का पालन आज के कालिजों में नहीं किया जा रहा है। इसीलिये कालिजों में ब्रह्मचारी भी नहीं बन रहे हैं। ब्रह्मचारी बनने के इच्छुक विद्यार्थी इसमें सावधान हो जायें।

(३) सत्संग:—सत्संग का मनुष्य जीवन पर सबसे भारी प्रभाव पड़ता है। सत्संग पाकर राक्षस देवता बन जाते हैं और कुसंग में पड़कर देवता भी राक्षस बन जाते हैं। गिरे हुए आदमी को उठाना सत्संग का ही काम है। दिव्य बाल ब्रह्मचारियों के दर्शनों से जन्म-जन्मान्तर के कुसंस्कार नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं। सत्संग में आकर मनुष्य की आँखें खुल जाती हैं-उससे अपने भले और बुरे का पता चल जाता है। किसी भी मूल्य पर सत्संग नहीं छोड़ना चाहिये। आजकल सत्संग के नाम पर कुसंग भी बहुत हो रहे हैं, उनसे बचकर रहना चाहिए। जो हमें ब्रह्मचर्य से गिराये वह कुसंग है। अतः सावधान !

(४) स्वाध्याय:—स्वाध्याय ब्रह्मचर्य के पालन में एक बहुत बड़ा साथी है। इसकी महिमा अपार है। ऋषियों और ब्रह्मचारियों के दर्शन कभी-कभी ही हो पाते—उस समय स्वाध्याय ही हमारा आलंबन होता है। जो ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहते हैं उन्हें ब्रह्मचर्य सम्बन्धी कुछ साहित्य अपने पास अवश्य रखना चाहिये। स्वांग, सिनेमा के गन्दे साहित्य ने आज देश के युवकों को बरबाद कर दिया है। कदाचार के इस साहित्य को भूल कर भी न देखें। ब्रह्मचारियों के जीवन-चरित्र और उनके द्वारा लिखित पुस्तकों को बार-बार पढ़ना चाहिये। स्वामी दयानन्द, विवेकानन्द, बिस्मिल, हनुमान आदि के जीवनों को पढ़ो और

उनसे प्रेरणा लो।

युवकों को आह्वान

जीवन में यौवन काल अतीव महत्वपूर्ण समय आता है—परन्तु कौन माई का लाल है जो इस आयु में होश में रहता है! देखने में यह आता है कि जब जवानी का समय आता है तो मनुष्य अन्धा हो जाता है। अपने जीवन को बुरी तरह से नष्ट करने पर कमर कस लेता है। कोई एक दो भाग्यशाली युवक होंगे जो यौवन में अपने ऊपर संयम रखते हों। इस जवानी की आयु में वास्तव में मनुष्य यदि अपने ऊपर कन्ट्रोल कर ले, तो वह संसार का बहुत बड़ा महापुरुष बन जाये।

आज का युवक इतना पथ-भ्रष्ट हो चुका है कि उस विवरण को लिखती हुई यह लेखनी लज्जा का अनुभव करती है। पाश्चात्य-सभ्यता के विषम वातावरण ने युवक समाज को आज बुरी तरह से पतन के गहरे गढ़े में धकेल दिया है और इसी कारण से युवक वर्ग भारतीय संस्कृति को सर्वथा छोड़ चुका है। हम आज के युवक को भारतीय नहीं कह सकते, वह नितान्त अंग्रेज बन चुका है। चोटी और यज्ञोपवीत (जनेऊ) रखने में वह शर्म मानता है और नेकटाई – जो ईसा मसीह की फाँसी की पहचान है—उसको बांधने में गौरव का अनुभव करता है। धोती और कुर्ता जो हमारी पुरानी वेशभूषा है—इसकी मज़ाक उड़ाई जाती है और कोट-पैंट व बुशर्ट का प्रचार किया जाता है। भारतीय वेषभूषा को असभ्यता और विदेशी वेशभूषा को सभ्यता कहा जाता है। धोती-कुर्ता पहनने वालों को Backward (पिछड़ा हुआ), कहा

जाता है विश्वविद्यालयों तथा इन्जीनियरिंग आदि बड़े-बड़े कालेजों में धोती-कुर्ता पहनना बन्द कर दिया गया है। लंगोट बांधना तो वे जानते ही नहीं यदि कोई लगोट बाँध भी ले तो उसका उपहास किया जाता है। आजकल का बाबू वर्ग कोट-पैंट में फंस कर अपने को बहुत बड़ा आदमी समझता है और दूसरों को मूर्ख। कुछ आदमी कोट-पैंट को दूसरों पर प्रभाव डालने का साधन मान बैठे हैं। इन आदमियों को क्या कहा जाय ! इन बेचारों को यह पता नहीं कि महान वही है जिसके विचार महान् हैं, कपड़ों से कोई बड़ा नहीं होता। हमारी संस्कृति में वही बड़ा माना जाता है जो सरल और सच्चरित्र हो। स्वामी रामतीर्थ जी ने योरुप में जाकर कहा था —"In Europe tailor makes the gentleman but in India character makes the gentleman." अर्थात् योरुप में मनुष्य को दर्जी बनाता है, परन्तु भारत में मनुष्य को चरित्र बनाता है।"

परन्तु आज बड़े-बड़े कालिजों में यह दशा पैदा हो गई है कि कोई विद्यार्थी भारतीय वेष-भूषा में विद्याध्ययन नहीं कर सकता। मैं आज के शिक्षा अधिकारियों से पूछना चाहता हूं कि ये भारतीय विद्यालय हैं या अंग्रेजी विद्यालय ? मुझे ऐसा लगता है जब भारत में वैदिक सभ्यता का राज्य आयेगा तो इस आधुनिक सभ्यता को जड़ से उखाड़ना पड़ेगा। इन विदेशी सभ्यता के कपड़ों की होली जलानी होगी। इसके बिना कार्य चल नहीं सकता। इस लार्ड मैकाले की शिक्षा में पल कर हम भारतीय नहीं बन रहे हैं। क्योंकि लार्ड मैकाले ने तो पहले ही कह दिया था—"I want a class form Indian in blood and colour but English in taste and opinion." अर्थात् मैं

भारत में ऐसा वर्ग बनाना चाहता हूं जो ऊपर रंग और रूप में तो भारतीय होगा, परन्तु अन्दर से वह अंग्रेज होगा। वास्तव में लार्ड मैकाले की योजना पूर्ण हुई—हम अंग्रेज बन गये। आज हम भारतीय नहीं हैं। इस समय हमें सबसे पहले आधुनिक शिक्षा पद्धति को आमूल-चूल बदलने के लिये एक बड़ा भारी आन्दोलन करना होगा। आप इसके लिए एकदम तैयार हो जायें।

सिनेमा के नंगे नाचों ने देश के सदाचार को दिन-दहाड़े लूट लिया है। सिनेमा ऐसा मीठा विष है कि जिसको खाकर मनुष्य सदा के लिए सदाचार के पथ से आंखें बन्द कर लेता है। करोड़ों बालकों और बालिकाओं का सदाचार इन सिनेमाघरों में स्वाहा हो चुका है। यही अवस्था बनी रही तो देश में सदाचारी ढूँढने पर भी नहीं मिलेगा। भारत में चरित्र की स्थापना उस दिन होगी, जिस दिन ये सिनेमाघर एक तरफ से लेकर दूसरी तरफ तक एकदम भस्मसात कर दिए जावेंगे। उससे पहले भारत में चरित्र की रक्षा नहीं हो सकती।

रेडियो के गन्दे गानों ने भी आज के युवक को पथभ्रष्ट किया है : इसके लिये भारतीय सरकार भी उत्तरदायी हैं क्योंकि वह गन्दे गानों पर प्रतिबंध नहीं लगाती। अब समय आ गया है कि इस विनाश के विरुद्ध एक जनक्रान्ति की जाये और देश के युवकों की रक्षा की जाये।

बीड़ी-सिगरेट (धूम्रपान) ने युवक जगत को इतना बुरी तरह से बर्बाद किया है कि कुछ कहा नहीं जाता। कोई भाग्यशाली ही इसके विनाश से बचा होगा। धूम्रपान के अतिरिक्त

चाय, अंडे, मांस, शराब आदि का देश में अत्यधिक प्रचार हुआ है और दिन प्रति दिन बढ़ता जा रहा है। इससे देश का भारी पतन हुआ है। देश की इतनी बुरी अवस्था होगई है कि जिधर भी देखो पापाचार व भ्रष्टाचार ही दिखाई देता है। देश का भविष्य अंधकारमय नजर आता है। भारत का भाग्य डूबना चाहता है। ऐसे समय में कौन है वह जो मैदान में आ कर टक्कर लेगा? कौन मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना शीश चढ़ायेगा? कौन है वह जो वैदिक संस्कृति की रक्षा के लिए अपने जीवन को स्वाहा करेगा? कौन है वह जो भ्रष्टाचार के विरोध में लड़ेगा? कौन सुभाष, शेखर, बिस्मिल और भगतसिंह की तरह हँसते हँसते अपना बलिदान चढ़ायेगा? यह धधकता प्रश्न है। कौन इस प्रश्न का उत्तर देगा?

युवको, मुझे तुम्हारे पर आशा है। तुम शेर हो यदि कोई तुम्हारी नींद खोल दे तो तुम फिर अगड़ाई लेकर खड़े भी हो जाते हो और जब तुम खड़े हो जाते हो तो फिर तुम्हारा कोई मुकाबला नहीं कर सकता। युवक यदि चाहे तो राज्य के राज्य पलट सकता है। युवक उस क्रान्ति को जन्म दे सकता हैं जिस को कोई रोक नहीं सकता। सिकन्दर युवक ही था। नैपोलियन ने २५ वर्ष की उम्र में इटली पर अपना झंडा फहराया। न्यूटन २१ वर्ष का वैज्ञानिक बन गया। लूथर २१ वर्ष का महान सुधारक बना। शंकराचार्य ने २२ वर्ष में सन्यास लेकर नास्तिक मतों को उखेड़ फेंका। ब्रह्मचारी दयानन्द ने यौवन के बल से सारे युग को बदल डाला। विवेकानन्द ने यौवन में ही विदेश में जाकर भारतीय संस्कृति का मन्त्र फूंका। प्रत्येक युवक शक्तियों का पुंज है। वह जो चाहे कर सकता है।

देश प्रहरियो ! जागो और संसार को जगादो । बहुत सो लिये—अब उठने और कुछ करने का समय आ गया है । कुछ बनने का यही समय है । इस उठती हुई जवानी में कुछ बनने का व्रत लो । अपने लक्ष्य को अभी से निर्धारित करो । मैं डंके की चोट कहना चाहता हूं—अभी तक तुम्हें अपने लक्ष्य का ठीक बोध नहीं है । अभी तक बी० ए०, एम० ए० करके, डाक्टर-वकील-इंजीनियर बनकर पैसा कमाना और नौकरी करना ही तुम्हारा लक्ष्य है । आप में से कुछ तो इससे भी नीचे के स्वप्न लेते हैं । किसी अच्छे धनी घराने में या किसी सुन्दर-सी लड़की से विवाह कराने के हेतु आपकी पढ़ाई हो रही है । मैं तुमसे ही पूछना चाहता हूं- क्या इन बातों से तुम्हारा और राष्ट्र का कल्याण हो जायेगा ? मैं तुम से साफ़-साफ कह देना चाहता हूं कि प्रिंसिपल, डाक्टर, वकील वैरिस्टर डिप्टी, कलक्टर, इंजीनियर और अवसरवादी राजनीतिज्ञ बन कर पैसा कमाना ही जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य नहीं है । डाक्टर वकील आदि बनने से मानव का उद्देश्य पूरा नहीं होता । इन लोगों का कार्य तो जनता को धोखा देकर अपना उल्लू सीधा करना है । ये लोग समाज के ऊपर भार रूप हैं । राष्ट्र में भ्रष्टाचार फैलाना इन्हीं लोगों का कार्य है । भूखी जनता का शोषण करना इन्हीं का काम है । इन ही के कारण आज सर्वत्र त्राहि-त्राहि मच रही है । राष्ट्र की जनता इन लोगों को एक क्षण भी नहीं देखना चाहती । क्या आप भी इन ही गद्दारों में सम्मिलित होना चाहते हैं ? क्या आप भी भ्रष्टाचार को बढ़ावा देना चाहते हैं ? क्या आप को भारत माता की रक्षा को परवाह नहीं है ? याद रखो, वकील, डाक्टर बनना ही जावन की सबसे बड़ी आकांक्षा नहीं है । मैं वकील, डाक्टर बनने का विरोधी नहीं

हूं, पर आजकल जिस भावना को आधार मान कर लोग उस तरफ भाग रहे हैं मैं उसका विरोधी हूं। मैं सबसे यह कहना चाहता हूं कि सबसे पहले आप मानव बनो और बाद में वकील, डाक्टर आदि। मानवता के अभाव में डाक्टर, वकील बुरी तरह जनता का शोषण करते हैं। ये राष्ट्र का कभी भी भला नहीं कर सकते। आज का अधिकारी वर्ग मनुष्य नहीं है, ये रिश्वत और पापाचार की मशीनें हैं। इसीलिये जनता में हा-हाकार मचा हुआ है। आज इस बात की सख्त जरूरत है कि कालिजों में आमूल चूल परिवर्तन किया जाये और यहां मानव तैयार किये जायें न कि नौकर और समाज-शोषक वकील और डाक्टर। रही नौकरी की बात, वह भी सुनो। विद्या पढ़कर स्वामी बना जाता है न कि नौकर। नौकर बनना कोई महत्त्व की बात नहीं है। नौकरी के इस भयंकर प्रवाह को देखकर देश के शुभ-चिन्तकों को कहना पड़ा—

नौकरी इस राक्षसी के फंदे में ऐसे फंसे ।
निज भाव, भाषा भेष तज कर जा रहे नीचे धंसे ॥
हा! राक्षसी के हाथ में निज रत्न जीवन दे दिया ।
वह भूमि रोती रह गई जिसने हमें पैदा किया ॥

नौकरी करना शिक्षा के उद्देश्यों में कहीं पर भी नहीं लिखा। शिक्षा का उद्देश्य तो शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आत्मिक और चारित्रिक उन्नति करना तथा अपने समाज की सेवा करना है। इसलिए आज के विद्यालयों के द्वार पर एक महत्त्वपूर्ण यह वाक्य अवश्य लिखा जाना चाहिए :-" विद्या पढ़ने के लिए आओ और विद्या पढ़कर देश की सेवा करो।" विद्यालयों में देश के सेवक तैयार होने चाहियें। होनहार भारत के

सपूतो ! आप अपने हृदय से नौकरी को निकाल दो । अपने को मातृभूमि के सेवक समझो । नौकरी जैसी तुच्छ भावनाओं पर लात मार दो । अपने जीवन का कुछ ऊँचा लक्ष्य बनाओ । भारतमाता तुम्हें पुकार रही है । आज ऋषियों की भूमि पर पापाचार-कदाचार का साम्राज्य छाया है । इसे मिटाने के लिये संघर्ष का एक बिगुल बजाना है । एक लम्बी लड़ाई लड़नी है । इसके लिये तरुणों की एक बड़ी सेना बनानी है । आर्य युवक संगठन की एक विशाल योजना बन गई है ।

इसमें कौन-कौन अपना नाम लिखायेगा ? क्या आप इस के लिए तैयार हैं ? गाँव-गाँव में, नगर-नगर में और प्रान्त-प्रान्त में सदाचारी युवकों की परिषदें बनानी हैं । सदाचारी युवकों का संगठन करना है । इसके लिये आप तैयार हो जायें ।

युवको ! भारत का भविष्य तुम्हारे कन्धों पर है । वैदिक संस्कृति की लाज तुम्हारे हाथों में है । इसीलिये इस अनाचार दावानल को शांत करने के लिय तुम्हारा आह्वान किया जाता है । वैदिक सस्कृति की आपको रक्षा करनी है । यदि आर्य संस्कृति बचेगी तो राष्ट्र बचेगा, यदि आर्य सस्कृति मिटेगी तो राष्ट्र भी मिट जायेगा । आज तुम्हारे जीवन की आहुति वैदिक यज्ञकुण्ड में पड़ जानी चाहिए । इस आर्य युवक सेना के बनाये बिना देश से पापाचार नष्ट नहीं हो सकता । कम से कम एक लाख सदाचारी युवक चाहियें । क्या आप तैयार हैं ? मैं इसका उत्तर चाहता हूं । देखें कौन उत्तर देता है !

अन्त में इतना लिखकर इस कथन को पूर्ण करता हूँ कि यदि इस लेख से किसी युवक को कुछ प्रेरणा मिल गई तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूंगा ।

वैदिक योगाश्रम शुक्रताल
का परिचय

सर्व सज्जनों को सूचित किया जाता है कि गंगा के पावन तीर्थ धाम शुक्रताल में वैदिक धर्म के प्रचार और योग साधना प्रशिक्षण के लिए वैदिक योगाश्रम एक प्रमुख महत्वपूर्ण संस्था है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह स्थान प्राचीन काल से सुविख्यात रहा है। आज भी यह स्थान जनता की श्रद्धा का मुख्य केन्द्र बना हुआ है। मुजफ्फरनगर जिले का तो यह सर्वोत्तम स्थान माना जाता है। बाहर से आने वाला कोई भी आदमी अपनी यात्रा उस समय तक अधूरी मानता है जिस समय तक इस स्थान को न देख ले। इसके कारण हैं:—प्रथम सुरसरी भागीरथी गंगा का पावन तट दर्शकों को आकर्षित करता है। गंगा स्नान के अभिलाषी जन तथा सुख शान्ति के जिज्ञासु बड़ी दूर-दूर से, हज़ारों लाखों की संख्या में यहां आते हैं। वास्तव में यह एक शान्ति का धाम है। एक ओर गंगा बह रही है दूसरी ओर गंगा का घोर घना जंगल है। बीच के अरण्य में साधु महात्माओं के सुन्दर-सुन्दर आश्रम हैं। मूर्ति पूजा और पौराणिकता का तो यह तीर्थ गढ़ है ही। इसी गढ़ में वैदिक योगाश्रम की सजीली ओ३म् पताका भी फहरा रही है और वैदिक धर्म का, आर्य संस्कृति का पावन सदेश सुना रही है। इस तीर्थ स्थान पर आने वाला कोई भी यात्री वैदिक योगाश्रम के दर्शनों से वंचित नहीं रह पाता क्योंकि यह आपका प्रिय आश्रम सबसे पहले विद्यमान है। शुक्रताल तीर्थ स्थान में प्रविष्ट होने के लिये आश्रम के द्वार पर से ही हो कर जाना पड़ता है। जितने नर नारी इस

पुण्य भूमि में आते हैं उनके कानों में सबसे पहले वेद मन्त्रों की ध्वनि पड़ती है और यहाँ से लौटते समय भी वेदों का सन्देश ही सुनाई पड़ता है।

जलवायु की दृष्टि से यह स्थान अति पवित्र है। नगरों के विषाक्त वातावरण, गन्दे नालों और मिलों के दूषित धूम्र से यह स्थान पर्याप्त दूर है। तपस्या के लिए एक अद्वितीय तपोभूमि है। साधना के लिए ऐसा स्थान मिलना दुर्लभ है। दूर-दूर से यहां साधक योग साधना करने के लिए आते रहते हैं। महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज ने भी यहां एक बार तीन दिन की समाधि लगाई थी।

पक्की सड़क बिजली, डाकखाना, पुलिस चौकी आदि सभी आधुनिक साधन यहाँ प्राप्त हैं। आश्रम के द्वार पर ही बस, रिक्शा, टांगे आदि उपलब्ध होते हैं। मुजफ्फरनगर से यहां प्रतिदिन बसें आती हैं। यातायात के लिए यहां कोई कष्ट नहीं है।

आश्रम की स्वामिनी रजिस्टर्ड कार्य कारिणी सभा है जिसका वार्षिक निर्वाचन होता है। आश्रम के साधारण सदस्यों का शुल्क २५) वार्षिक है. आजीवन सदस्यों का १०१) मात्र है, १०००) एक मुश्त देने वाले हितैषी (Benefactor) सदस्य कहलाते हैं, दो सहस्र रुपये एक मुश्त देने वाले या आश्रम में भवन बनवाने वाले संरक्षक (Patron) सदस्य कहलाते हैं। और ५०००) एक मुश्त या दो वर्ष के भीतर देने वाले धर्म-रक्षक सदस्य माने जाते हैं।

आश्रम के विशेष आकर्षण

(१) योगासन, प्राणायाम तथा योगसाधन का प्रशिक्षण दिया जाता है।

(२) प्रतिदिन यज्ञ-संध्या तथा सत्संग-उपदेश होता है ।

(३) वेद-शास्त्रों के पठन-पाठन की सुन्दर व्यवस्था है। युवक छात्रों के लिए उपदेशक महाविद्यालय है ।

(४) औषध उपचार के लिये धर्मार्थ औषधालय भी है ।

(५) वैदिक साहित्य के अनुशीलन के लिए वैदिक पुस्तकालय है और प्रचारार्थ सस्ता साहित्य भी यहां से उपलब्ध होता है ।

(६) माताओं के लिये भी ठहरने और साधना स्वाध्याय की व्यवस्था है ।

(७) वर्ष में ब्रह्मचर्य शिक्षण शिविर, साधना शिविर और आर्य महा सम्मेलन आदि का आयोजन होता रहता है । कार्तिक सुदी दशमी से कार्तिक पूर्णिमा तक गंगा स्नान के मेले के अवसर पर प्रत्येक वर्ष आश्रम का वार्षिक महोत्सव होता है ।

(८) आश्रम में व्यक्तिगत कुटियाएं भी बनाई जा सकती हैं । इस प्रकार यह आश्रम वैदिक संस्कृति की रक्षा में रात दिन जुटा हुआ है और प्रभु प्राप्ति के पावन पथ से भटके हुए मानवों को सच्ची राह दिखा रहा है । साधना प्रेमियों के लिए तो यह एक केन्द्र बन गया है । योग जिज्ञासु यहां से विशेष लाभ उठा सकते हैं । वानप्रस्थी तथा सन्यासी महानुभाव भी यहां उपदेशक बनने की सामग्री प्राप्त कर सकते हैं ।

अन्त में सब महानुभावों से प्रार्थना है कि इस आश्रम से लाभ उठायें और इस की उन्नति में तन, मन और धन से सहयोग करें ।

निवेदक :

ब्रह्मचारी बलदेव नैष्ठिक

संस्थापक-वैदिक योगाश्रम,

शुक्रताल, [मुजफ्फरनगर] उ० प्र०

वैदिक योगाश्रम शुक्रताल में

गुरुकुल महाविद्यालय

सर्व सज्जनों को यह जानकर हर्ष होगा कि वैदिक योगाश्रम शुक्रताल जिला मुजफ्फरनगर में वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार के लिए उपदेशक महाविद्यालय तथा गुरुकुल प्रारम्भ हो गया है जिसमें वेदशास्त्र, उपनिषद्, व्याकरण, संस्कृत साहित्य एवं सब धर्मों का पठन पाठन कराया जाता है। गुरुकुल में १२ वर्ष का बालक प्रविष्ट हो सकेगा परन्तु उपदेशक महाविद्यालय में दसवीं श्रेणी उत्तीर्ण युवक छात्र ही प्रवेश पा सकेंगे।

गुरुकुल महाविद्यालय में श्री मद्दयानन्द आर्ष विद्या-पीठ की प्रथमा, मध्यमा, शास्त्री, आचार्य की परीक्षाएं हुआ करेंगी। इन परीक्षाओं का गुरुकुल महाविद्यालय केन्द्र स्वीकृत हो गया है।

गुरुकुल में बच्चों को भेजने में शीघ्रता करें। पुनः प्रवेश मिलना दुर्लभ होगा।

सभी महानुभावों से प्रार्थना है कि वे गुरुकुल महाविद्यालय की आर्थिक सहायता करें जिससे गुरुकुल अपने पैरों पर खड़ा हो जाये। दानी महानुभाव इधर अवश्य ध्यान दें। दानी महानुभाव मासिक सहायता भी कर सकते हैं।

गुरुकुल के लिए यज्ञशाला का निर्माण हो रहा है। यज्ञ-शाला के लिए भी दानी महानुभाव उदारता दिखायें और हार्दिक सहयोग देने की कृपा करें।

नोटः—गुरुकुल में जीवन निर्माण एवं सदाचार पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

निवेदक :
ब्रह्मचारी बलदेव नैष्ठिक

आर्य समाज के नियम

१—सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

२—ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

३—वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

४—सत्य के ग्रहण करने और असत्य के त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

५—सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहियें।

६—संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७—सब से प्रीति पूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिये।

८—अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

९—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

१०—सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

लेखक की दो अनमोल पुस्तकें

१—पंचमहायज्ञ संदेश [मूल्य १ रु०

लेखक—ब्रह्मचारी बलदेव नैष्ठिक
वैदिक योगाश्रम, शुक्रताल
जिला मुजफ्फरनगर (उ० प्र०)

वैदिक योगाश्रम शुक्रताल द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक अभूत-पूर्व है। संध्या क्या है ? संध्या क्यों करनी चाहिए ? यज्ञ क्या है ? यज्ञ के क्या लाभ हैं ? पंच महायज्ञों का विस्तृत वर्णन बहुत रोचक ढंग से लिखा गया है। सभी यज्ञों की पूरी विधि लिखी गई है।

२—भारतीय संस्कृति और यज्ञोपवीत

यज्ञोपवीत के विषय में एक अभूतपूर्व पुस्तक है। यज्ञोपवीत क्यों पहनें ? यज्ञोपवीत का क्या अर्थ है ? यज्ञोपवीत का वेद शास्त्र में क्या महत्त्व है ? भारतीय संस्कृति और यज्ञोपवीत का क्या सम्बन्ध है—इत्यादि पचास से अधिक विषयों का स्पष्टीकरण पुस्तक में है। उपदेशक के लिए भारतीय संस्कृति, यज्ञ और यज्ञोपवीत पर बोलने के लिए कम से कम एक मास की सामग्री है। इस पुस्तक को पढ़कर प्रत्येक भारतीय वैदिक संस्कृति के आगे नतमस्तक हो जाता है। पुस्तक पढ़ने योग्य है।

प्राप्ति स्थान :
वैदिक योगाश्रम, शुक्रताल
जिला मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)

ब्रह्मचारी बलदेव नैष्ठिक ने झंकार प्रेस मुजफ्फरनगर में मुद्रित कराकर वैदिक योगाश्रम शुक्रताल से प्रकाशित किया।